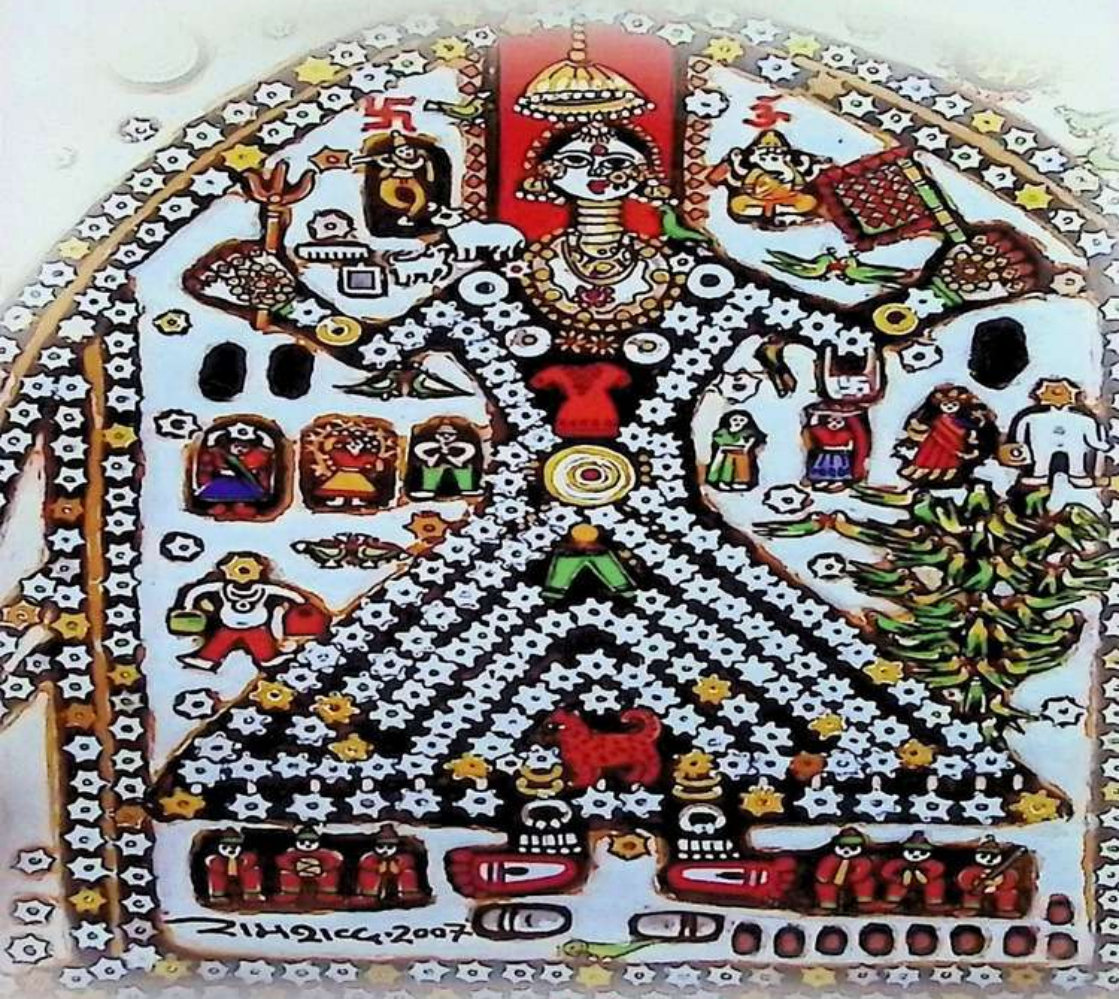
ना बरगद के छांव, ना बाबा के गाँव



कनक किशोर

www.bhojpurisahityangan.com

ना बरगद के छांव, ना बाबा के गाँव

कनक किशोर

श्री नर्मदा प्रकाशन

www.bhojpurisahityangan.com

ना बरगद के छांव, ना बाबा के गाँव

कनक किशोर

ISBN – 978-93-344-5545-8

श्री नर्मदा प्रकाशन

प्लॉट नं. 11 त्रिवेणी नगर, लखनऊ (उ.प्र.)

चलभाष : 6391393776

रचनाओं का एकाधिकार : लेखकाधीन

संस्करण : प्रथम (2025)

मूल्य – रु. 280.00 मात्र

आवरण – गूगल से साभार

Na Bargad Ke Chhanv, Na Baba Ka Gaanv

Kanak Kishore

www.bhojpurisahityangan.com



प्रधान संपादक 'प्रगति वार्ता' आ 'माई', मनोहर व्यक्तित्व के स्वामी परम आदरणीय डॉ. रामजन्म मिश्र, जेकर जिनिगी माई, माटी के मोल जानेला, जेकर जिनिगी अपना खातिर ना परिवार खातिर, जे अध्यात्म, साहित्य आ पत्रकारिता के संगम में खुद गोता लगा आचार्य आ गुरु के सानिध्य में मोती चुने में जिनिगी खपा देलन, के चरण में सादर समर्पित।

कनक किशोर

www.bhojpurisahityangan.com

अनुभव के रंग

- परिचय दास

कविता सृजन एगो अइसन अनंत यात्रा ह, जवन मनुष्य के अनुभव, संवेदना आ विचार के विभिन्न रंगन के उजागर करेले। भोजपुरी कविता के इतिहास में समकालीन कवि लोग एक नया आयाम जोड़ रहल बाड़न। एही संदर्भ में हम एक अद्भुत किताब के बात करीं, जवन राऊर हाथ में बा आ जेकर रचनाकार बाड़न, श्री कनक किशोर। एकर शीर्षक बा '...ना बरगद के छांव, ना बाबा के गांव'। एह किताब में प्रस्तुत कविता ना खाली व्यक्तिगत भावना बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक आ राजनीतिक मुद्दन पर प्रकाश डालत बाड़ी स। कवि के रचना में भोजपुरी के ग्रामीण जीवन के विविधता, परंपरा आ आधुनिकता के बीच के जटिल संबंध के चित्रण मिलत बा। ई कविता हमनी के ना खाली एगो आंतरिक यात्रा पर ले जात बाड़ी स, बल्कि बाहरी दुनिया के वास्तविकतो के बारे में सजग कर देत बाड़ी स। कवि आपन अनुभव के माध्यम से पाठक के संवेदी कर देत बाड़न, जवन उनकर रचना के गहराई आ सार्थकता के बढ़ा देता।

समकालीन भोजपुरी कविता के एगो विशेषता इहो बा कि इ आज के समय के चुनौती आ संघर्ष के सटीक चित्रण करे में सक्षम बाड़ी स। एह पुस्तक के कवि विभिन्न सामाजिक मुद्दा, जइसे कि बेरोजगारी, शिक्षा, जातिवाद आ महिला सशक्तीकरनो पर ध्यान दे रहल बा। एह पुस्तक के कविता में संघर्ष आ स्थिति के स्पष्ट रूप से दर्शावल गइल बा। कवि अपने रचना में ना सिर्फ अपने विचार प्रस्तुत कर रहल बाड़न, बल्कि ओह लोग के आवाज़ो बन के उभर रहल बाड़न, जिनकर आवाज़ अक्सर अनसुनल रह जाला।

एह किताब में पाठकन के भोजपुरी कविता के विविध स्वरूप आ शैली के अनुभव होई। ई कवितन में लयबद्धता आ मुक्तछंद के साथ-साथ विभिन्न शिल्प-प्रयोगो प्रस्तुत कइल गइल बा। कवि के प्रयोगशीलता, एक ओर भाषा के नवाचार के रूप में उभर के आइल बा, उहें दुसरे ओर, इ परंपरा के समृद्धि के भी

www.bhojpurisahityangan.com

जिंदा रखे के प्रयास कर रहल बा। एह किताब के माध्यम से पाठक भोजपुरी कविता के एगो अनोखा रंगरूप से परिचित होई। भोजपुरी भाषा के मिठास आ सरलता, एह कवितन में भरपूर देखल जा सकत बा। कवि अपने शब्दन के माध्यम से पाठकन के दिल के गहराई तक पहुँच जात बाड़ें। एह संकलन के कवितन में रोजमर्रा के जीवन के अनुभव, दुख आ सुख के समावेश बा, जे पाठक के अपना जीवन के याद दिला देत बाड़ी स। कवि अपना रचना में पारंपरिक भोजपुरी गीतन के लय आ भावना के समाहित कइले बाड़न, जवन एक विशेष अनुभूति उत्पन्न करत बिया।

एह किताब में प्रस्तुत कविता खाली व्यक्तिगत अनुभव के नाजुक बुनाई ना हईं स, बलुक समाज के बड़हन परिप्रेक्ष्यो में विचार करत बाड़ी स। कवि के दृष्टिकोण में गहराई आ संवेदनशीलता बाड़ी स, जवन पाठकन के सोचे पर मजबूर कर देत बा। कविता में लोकजीवन के विविध रंग आ ओकर जटिलता के साफ-साफ चित्रन कइल गइल बा। ई कविता पाठक के सोच आ विचार के प्रभावित करत बा। कविता में प्रयोगात्मकता के एक नया रूप भी देखल जात बा। कवि विभिन्न शिल्प आ प्रयोग के माध्यम से कविता के रचना कइले बाड़न। कुछ कविता मुक्तछंद में लिखत बाड़न, जबकि कुछ कविता में पारंपरिक छंदन के आधार पर नवीनता ले आवत बाड़न। एह तरह के प्रयोग भोजपुरी कविता के एक नया पहचान दिहलस, जवन साहित्यिक धारा के समृद्ध बनावत बा।

एह किताब में एक अइसन कवि के रचना समाहित बाड़ी स, जे ना सिर्फ भोजपुरी साहित्य में खास स्थान रखत बाड़न, बलुक समाज के प्रति आपन जिम्मेदारियन के बखानो कर रहल बाड़न। उनकर कविता खाली शब्दन के खेल ना हई स, बलुक एह में समाज के जटिलता, संघर्ष आ आशा के गहराई से समझे के कोशिश कइल गइल बा। एह पुस्तक के माध्यम से हम ओह सब कवियन के आवाज़ के सुन सकींला, जिनकर विचार आ संवेदना अक्सर छुपल रह जाली स।

ई किताब खाली एगो साहित्यिक संग्रह ना ह, बलुक ई भोजपुरी संस्कृति आ पहचान के एगो महत्त्वपूर्ण दस्तावेजो ह। ई पाठक लोग के भोजपुरी भाषा आ संस्कृति के प्रति जागरूक करी

www.bhojpurisahityangan.com

आ एह माध्यम से पाठकन के अपने समाज आ संस्कृति के बारे में सोचे पर मजबूर करी। भोजपुरी कविता के ई संग्रह ना खाली पाठकन के आनंदित करी, बलुक ओह लोग के सोचे आ महसूस करे के एक नया अनुभवो देई।

हम आशा करीलें कि कविता के ई किताब पाठकन के दिल में एगो विशेष स्थान बनाई आ भोजपुरी कविता के समकालीन स्वरूप के एगो नया पहचान दिलाई। एह किताब के माध्यम से भोजपुरी साहित्य में एगो नया दिशा आ दृष्टिकोण के प्रकाश में लावे के कोशिश कइल गइल बा आ एह संकलन के कविता सब समाज के विचार आ संवेदन के प्रकट करत बाड़ी स। एह किताब के माध्यम से हमनी के एगो अइसन यात्रा पर चलल जाई, जहाँ हमनी के भोजपुरी कविता के साथ-साथ संस्कृति आ समाज के गहराई में भी डुबकी लगावे के मिली।

चलभाष – 9968269237

www.bhojpurisahityangan.com

आगि लागे बनवा, जरे परबतवा, मोरे लेखे हो साजन जरे नइहरवा

– कनक किशोर

एह संकलन के परिचय 'परिचय दास' जी देले बानीं फेर हम परिचय का दीं? हम बाबा भीनक राम के एगो पद के एगो लाइन उधार लेके इहे कहब कि ई संकलन 'आगि लागे बनवा, जरे परबतवा, मोरे लेखे हो साजन जरे नइहरवा' के चरितार्थ करत मनई के जिनिगी के यथार्थ ह। गाँवे हमनी के नइहर ह जे भूमंडलीकरण, बाजारवाद के आगि में जर रहल बा, आधुनिकता के आन्ही में उधिया आपन रियलिटी के छोड़ि रील बन के रह गइल बा, ग्लोबल गाँव बनि किसान-मजदूर के गाँव कारपोरेट के गोद में बइठ गइल बा जेह कारण गाँव के स्वरूप आ संस्कृति दूनों जरि के समाप्त हो रहल बा। देश धनी हो रहल बा बाकिर गाँव के गरीबी नइखे भागत,लोग के पलायन नइखे रूकत, विस्थापन के भूत दिन-रात सतावत बा, खेत में कारखाना धुआं उगलत बा बाकिर ग्रामीण के हाथ रोजगार खातिर तरसत बा, विकास के बढ़त रफ्तार के बात गुंजत बा कान में बाकिर आम जन के थारी में भात के आस में ढनढनात बा ई गंउवा देने देखे-झांके में लउकत बा आ उहे आँखि देखलका के रखे के एगो प्रयास कइल गइल बा एह संकलन में। सुराज के साथे हमनिए के ना गाँवों कुछ सपना देखले रहे बाकिर देखलका सपना ना हमनी के पूरा भइल ना गाँव के। प्रतिरोध हल्ले गुल्ला कके, लाल-करिया झंडे दिखा के ना होला। भाई चंदेश्वर के कहल ह 'कई बार तो कुछ रंग बन जाते/ प्रतिरोध की सशक्त अभिव्यक्ति।' रात के रात आ दिन के दिन कहे में आज दिक्कत हो रहल बा।सत्य कडूवा होला। सत्ता आ कारपोरेट सांच ना सुनल चाहे। हमनीं के जिनिगी मकड़जाल में फंसि गइल बा। आम जन के समय बीत रहल बा बड़ी मुश्किल से रोजी-रोटी के जुगाड़ में। अतनो रहित त चलित बाकिर जेने जा दुरदुरा देल जात बा मनई, जेने देखऽ ओनही दलदल। बटोहिया के गाँव जमीन पर छोड़ीं कागजो पर नइखे देखे के मिलत। गाँव

www.bhojpurisahityangan.com

के लोगवे ना गाछो-बिरीछ गंउवा छोड़ि पराइल बा। झूला-कजरी, फगुआ-चइता कहाँ सुनाई? जब गाँव बधार सून पड़ गइल तब रस जिनिगी में कइसे रही? एही सत्य के रखे, गाँव के वर्तमान रंग के रखे के, सगुण जिनिगी में निरगुणिया रस परोसे के एगो छोट प्रयास ह ई संकलन 'ना बरगद के छांव, ना बाबा के गांव'। सच्चाई रखल, बोलल जदि प्रतिरोध के अभिव्यक्ति ह त ई प्रतिरोधी अभिव्यक्ति ह। एह संकलन के कविता के एगो अंश-

गंउवा बदलल, मनई बदलल
बदलल समय के चाल
लोक से लोप भइल सब थाती
सभे बजावत गाल
बदलत रूप देश के देखि के
आँखिन उठल सवाल

नदी सुखाइल, दरकल हिमगिरि
भाईचारा खा गइल बाजार
धरम के नांव मानवता भेंट चढ़ल
मजहब आजु बनल दीवार
मुअत रोज किसान देश में
सेठ बनत बा मालामाल

विविधता में सुंदर भारत छवि
आजु नजर ना आवे
बोली, भाषा, धरम, क्षेत्रियता
सबके आजु लड़ावे
का गाईं हम गीत बटोहिया
मन जब भरल मलाल।

मन मलाल से भरल बा तबो माई आ माटी के बदलल रूप कुछ कहे-लिखे खातिर बाध्य कइलस।

आदरणीय प्रो. रविन्द्र नाथ श्रीवास्तव 'परिचय दास' जी के हृदय तल से आभार आ साधुवाद कि उहाँ के आपन व्यस्त जिनिगी में से बहुमूल्य समय निकाल एह किताब के भूमिका लिखनीं। भाई सत्यम बघेल आ श्री नर्मदा प्रकाशन परिवार

www.bhojpurisahityangan.com

लखनऊ के विशेष साधुवाद कि पुस्तक के सुन्दर रूप सज्जा के साथ बहुत कम समय में हमनीं हाथे रखलन। पाठक कवनो किताब के सबसे बड़ आलोचक होला। किताब अब रउवा हाथे बा आपन पाठकीय प्रतिक्रिया से जरूर अवगत कराईं इहे निहोरा बा।

जय भोजपुरी!

– कनक किशोर
चलभाष – 9279200401

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

1.	भोला खोलऽ ना केवड़िया	13
2.	बदलल समय के चाल	15
3.	इयाद	16
4.	केहू देखल ह?	17
5.	गाँव छोड़िके सबकुछ बा	19
6.	ई कइसन दिन आइल	22
7.	महँगाई	24
8.	किसान सरकार	25
9.	भूख का मारी	27
10.	जिनिगी आस के दिया ह	28
11.	हमार बलचनवा	29
12.	किसान – 1	30
13.	किसान – 2	30
14.	लोक सच्चाई	31
15.	मदारी	32
16.	गंवई परिवेश	32
17.	कुकुर बिलाई	33
18.	किसान – 3	34
19.	ले – दे	34
20.	संकट	35
21.	किसान – 4	35
22.	जमीन	36
23.	गाँव आ शहर	37
24.	खेती–किसानी	39
25.	बरगद	40
26.	जड़ आ जमीन	41
27.	गाँव	42
28.	ग्लोबल गांव	43
29.	पानी बेपानी	45
30.	जल भंडार	46
31.	पानी	47
32.	भाई–भाई	48

www.bhojpurisahityangan.com

33. ईश्वर के चुप्पी 48
34. नोनार के विगड़त बुनावट 49
35. वाजार 67
36. डर 67
37. माटी के सुवास 68
38. नकाव 69
39. वाजार खातिर 69
40. सपना 71
41. मालपुआ 73
42. भोजपुरियत में दम वा 75
43. मान्यता के मामिला 78
44. अगुआ के दिंयका खा गइल 81
45. माई के वखरा 83
46. शहरी 86
47. पुरखन के थाती 88
48. गोल 89
49. चिट्ठी 90
50. परिचय 92
51. कहां गइल? 93
52. विटिया 94
53. माटी के बेटा 95
54. सावन में ससुरारी 98
55. गरीव 100
56. कइसे करीं मनुहार 101
57. वदलत परिवेश 102
58. बढ़त रहीं जे राह में 103
59. माई 104
60. घरे–घरे एके हाल 105
61. एगो आम आदमी 106
62. कवले रहीं हम चुप 107
63. चान मामा घरे 108
64. करजा 109
65. दूनों लोक से गइले पांडे 110
66. जिनिगी त मनुहार ह 111
67. ई सिंगार भारी वा 112

www.bhojpurisahityangan.com

68. सब पुरान हउवे 113
69. प्रीति के रंग अजूवा 114
70. शुभ कोहवर 115
71. नईहर के दिन चार 116
72. अंतर ज्योत जराईं 118
73. साधो मति चंचल ना नीक 119
74. नाच 121
75. गुनहीन अँखिया के आन्हर 122
76. देहिया माया ह भाई 124
77. पिया मिलन के आस 126
78. अंत में खुदा–खुदा 128
79. मानुष के जाति एके 129
80. सत्, साहिव, हुजूर 131
81. हरि चरण सुखदाई 132

www.bhojpurisahityangan.com

भोला खोलऽ ना केवड़िया

भोला खोलऽ ना केवड़िया
बहरे खाड़ि बानीं हम
बाहर पसरल घोर अन्हरिया
कदम-कदम पर चोर
जग में फैलल माया मोह बा
उठत बा सगरी शोर
शिवजी सुनीं ना विनीतिया
बहरे खाड़ि बानीं हम।

सावन-भादो हम ना जानीं
सुनलऽ औघड़ दानी
मन मंदिर ह मोर शिवाला
अतना हमहूं जानीं
हम ना जाइब कैलाशे खोजे
छोड़ीं अब मनमानी
शंकर फेरीं जनि नजरिया
बहरे खाड़ि बानीं हम।

दीन हीन हम धन से बानीं
मन के दौलतमंद
भाव भरल संग लोटा पानी
दुअरा खाड़ि अकलमंद
बाहर घुमनीं आजु ले झूठे
गुरु कहस मतिमंद

www.bhojpurisahityangan.com

शम्भू राखीं ना सरनिया
बहरे खाड़ि बानीं हम।

ना मानब त प्राण तेयागब
आजु राउर दुअरिआ
ना घूमब हम जगह जगह
बसब राउर नगरिया
रउरे संग दिन रात गुजारब
गाइब रउरे गीतिया
भोला खोलऽ ना केवड़िया
बहरे खाड़ि बानीं हम।

www.bhojpurisahityangan.com

बदलल समय के चाल

ताल, पोखर, बाग, बगइचा
गंउवा के पहचान
गंगा-जमुनी तहजीब रहे
हमरा देश के शान
पूछे बटोहिया आजु हमसे
शस्य श्यामला सुनर धरती
काहे आज बेहाल?

गंउवा बदलल, मनई बदलल
बदलल समय के चाल
लोक से लोप भइल सब थाती
सभे बजावत गाल
बदलत रूप देश के देखि के
आँखिन उठल सवाल

नदी सुखाइल, दरकल हिमगिरि
भाईचारा खा गइल बाजार
धरम के नांव मानवता भेंट चढ़ल
मजहब आजु बनल दीवार
मुअत रोज किसान देश में
सेठ बनत बा मालामाल

विविधता में सुंदर भारत छवि
आजु नजर ना आवे
बोली, भाषा, धरम, क्षेत्रियता
सबके आजु लड़ावे
का गाईं हम गीत बटोहिया
मन जब भरल मलाल।

www.bhojpurisahityangan.com

इयाद

इयाद में बसल गाँव
माटी के महक
उदारीकरण के छांव में
आजु गइल लहक
बढ़ियाता धन घर में
लोक धन गंवाईं

बाबा के बतिया रहे
अनुभव के थाती
दादी के नुस्खा रहे
दवाई के पराति
बाबा-दादी दूर अब
लोक जग हँसाई

पोसुआ सुग्गा जइसन
पोता बुझात बा
माई भाषा छोड़ि अब
अंग्रेजी बड़बड़ात बा
एकल परिवार में अब
लोक ना भेंटाई

बटोहिया पूछत बा कि
देस कहाँ भाई?
देश में विकास बढ़ल
लोक के गंवाई

www.bhojpurisahityangan.com

अइसन विकास का
विकास कहाई?

सभे बड़ूवे घर आजु
मनई ना भेंटाइल
टोला, मोहल्ला, गाँव
धन में अझुराइल
बेटा पूछे बाप से कि
कबले लोक ढोआई?

❖❖❖❖❖

केहू देखल ह?

ग्लोबल गाँव में
हमार गाँव भुला गइल
केहू देखल ह?

गइनीं गाँवे तऽ
गाँव छोड़ि सब लउकल
ना हरियरी रहे, ना खरिहान
ना हमरा पोखरा लउकल
गाय, बैल, बकरी भुला गइल
केहू देखल ह?

भउजी रही
ऊ दुलार ना रहे
छेड़-छाड़ में

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ मिठास ना रहे
आँगन के रौनक लुटा गइल
केहू देखल ह?

होली चइता के
रंग फीका
ना रहल कब्बड्डी
ना रहल चिका
गाँव के हवा सूखा गइल
केहू देखल ह?

माटी में ना रहल
सौंधी महक
बासमती चाउर में
कहँवा बा गमक?
रिसतो नाता अउरा गइल
केहू देखल ह?

भोला पंसारी ना रहले
अपना बाजार आ गइल
पछिम भर बगइचा
फोर लेन खा गइल
गाँव केने उधिआ गइल
केहू देखल ह?

सुलेमान मियां उझरइले
नमाज में
दब गइले मोहन पंडित
हिन्दू समाज में

www.bhojpurisahityangan.com

गाँव में मजहब दीवार भइल
केहू देखल ह?

सांच कहत बानीं हम
ग्लोबल गाँव में
हमरो गाँव भुला गइल,
पछेया बयार में
गाँवे ना लोक से
संस्कार संस्कृति भुला गइल।

❖❖❖❖❖

गाँव छोड़िके सबकुछ बा

रोड शानदार बा
मोटर गाड़ी खाड़ बा
बाबा के दालान बा
विकास के प्लान बा
गंउवा हलकान बा
का कहीं जी
गाँव छोड़िके सबकुछ बा

अलगू के दुक़ान बा
शहर जस पहचान बा
फोर जी बा, फाइव जी बा
डीजिटल जहान बा
कंक्रीट के जंगल बा
का कहीं जी

www.bhojpurisahityangan.com

गाँव छोड़िके सबकुछ बा

जाति बा, गोतिया बा
चार किता मुकदमा बा
किसान परेशान बा
मजदूर हलकान बा
बेरोजगारी के खान बा
का कहीं जी
गाँव छोड़िके सबकुछ बा

राजा के फरमान बा
विधायक जी के आन बा
बिचौलिया के चलती बा
माटी के मोल धरती बा
सभे केहू पंडित बा
का कहीं जी
गाँव छोड़िके सबकुछ बा

नवही के पलायन बा
खेत भरल रसायन बा
डी जे बा, टीवी बा
बहुत कुछ मनसाइन बा
छउड़ा-छउड़ी नाचत बा
का कहीं जी
गाँव छोड़िके सबकुछ बा
नदी के पेट तोपाइल बा
ना पानी बा, ना बालू बा
ताल-तलैया भुलाइल बा

www.bhojpurisahityangan.com

खेतन में कारखाना बा
बाग सब कटाइल बा
का कहीं जी
गाँव छोड़िके सबकुछ बा

ना गोरैया बिया, ना तोता बा
नाही कतहूं खोंता बा
ना पगड़ी बा, ना धोती बा
चौधरी के पीटत पोता बा
सास के दुर्गति बा
का कहीं जी
गाँव छोड़िके सबकुछ बा

मुखिया जी के चलती बा
लूटे खातिर हाथे खनती बा
वार्ड मेंबर के चुप्पी बा
मुखिया पति के मस्ती बा
गाँव बनल अब बस्ती बा
का कहीं जी
गाँव छोड़िके सबकुछ बा

चहुंओर विकास दिखत बा
लूट पर ना गस्ती बा
चौकीदार खुद में बाझल बा
ओकर सगरी जास्ती बा
देखि मोर कपार बथत बा
का कहीं जी
गाँव छोड़िके सबकुछ बा।

www.bhojpurisahityangan.com

ई कइसन दिन आइल

झुलुआ, कजरी, श्रम गीत, सावन
बदुरी बिनु मुरझाइल
ई कइसन दिन आइल

फेल भइल घाघ के बतिया
खेत के असरा सेराइल
पीटत माथ किसान खेत बीच
ई कइसन दिन आइल
जरत बा जमड़ी तेज घाम में
बिचड़ा सब मुरझाइल
ई कइसन दिन आइल

मजदूरी के आस में बुधवा
सूरत गइल पराई
रोजगार उहवों ना भेंटल
खून बेचि कीने दवाई
गांव प बाबू करजे डूबले
भूखे मरल भउजाई
ई कइसन दिन आइल

काल्हु सामंत माथे बइठल
आजु कारपोरेट माथे
बिहन से रसायन तक ले
आजु बा उनुका हाथे

www.bhojpurisahityangan.com

अन्न देखे ना घरवा मुंह के
भूख बा हमरा माथे
ई कइसन दिन आइल

सब भावे जब पेट में दाना
कजरी का हम गाईं
जेठ से बदतर जरत बा देह
झुलुआ कइसे लगाईं
रोपनी आजु ले लागल ना त
श्रम गीत का गाईं
ई कइसन दिन आइल

मौसम बा बेईमान आजु भइल
शासन चोर लुटेरा
संत समाज बाजार जा बइठल
सत्ता डललस डेरा
कजरी कइसे मुंह से निकसे
चोट चहुंओर करारा
झुलुआ, कजरी, श्रम गीत, सावन
देखि हाल मुरझाइल
ई कइसन दिन आइल

www.bhojpurisahityangan.com

महँगाई

हरि हरि महँगी के मारल देसवा
मालिक बउरहवा ए हरि।
खाली सुनेला आपने बतिया
करेला मनमानी ए हरि।

रोज दाम डीजल पेट्रोल बढ़ावे
आटा चाउर पर जीएसटी लगावे
घरवा में घरनी के हाल बा बेहाल
गैस के कीमत असमाने ए हरि।

रोवे मजदूरवा आ रोवे किसानवा
खाद आ बीज के नइखे ठिकनवा
बिजुरी करत बिया खेल मनमानी
कइसे के गाई कजरिया ए हरि।

बेटुवा पढ़ाईं कि करीं हम दवाई
छुटकी ला कइसे दहेज हम जुटाईं
ललुआ के पापा करमवे के छोट
रोजियो के आस छिनाइल ए हरि।

बड़- बड़ बाति विकास के गवाला
जाति-पांति के जहर बोआला
धरम के नाम अधरम कुकरम सब
हम कइसे कढ़ाई कजरिया ए हरि।

हरि हरि साँसत में पड़ल परनवा
देखि सासन चलनिया ए हरि।
गाईं हम कजरी कि पीटीं कपरवा
रउवे अब हमके बताईं ए हरि।

www.bhojpurisahityangan.com

किसान सरकार

राज घाट पर खइनी कसम हम
चुप ना बइठब अब सरकार
बरिस पचहत्तर रहनी चुप हम
अब ना सुनब कुछ सरकार।

झूठ मूठ के ठगलऽ आज ले
आपन जिनिगी भइल बा भार
पढ़ि-लिख लड़िका बइठल बा
कबले रही माथ के भार।
खाद बीज पर आफत आइल
जिंदा मार दिहलऽ सरकार
खेत में चिमनी धुंआ बा फेंकत
खेते रहे हमार सिंगार।

देस के हालत आँखि खोलि देखऽ
जनता मुए महँगाई के मार
भइल अतहतह चारो ओरिया
चोर-उच्चका के भरमार।
आजादी के अमृत महोत्सव
लूट देखि के भइल बीमार
राम राज ना आइल देस में
सुनि के बापू रोवे बेजार।

जागल अब मजदूर किसान बा

www.bhojpurisahityangan.com

अब खेला देख सरकार
दिल्ली गढ़ पर करब हम हमला
वोट से मारब लंगड़ी मार।
बहुत लड़ाई भइल रोड पर
चुनावी समर में होई तकरार
मजदूर किसान के रही गठबंधन
अबकी बनी किसान सरकार।

राज घाट पर लेब सपथ हम
जनता के होखी सरकार
गाँव-गाँव में मंत्री घूमीहन
जनता हाथे सब अधिकार।
कृषि उपज घरहीं में बेचब
दुआर पर अइहन साहुकार
झाँकऽ अपना अंदर अब तू
केकरा बले भइलऽ करतार।

छोड़ऽ-छोड़ऽ गद्दी अब तू
सत्ता आज बनल बैपार
सुन आगाज मजदूर किसान के
देदऽ उन्हके सत्ता भार।
सपना पूरा करब बापू के
संसद बनी मोर खेत बधार
रोकब लूट विकास के नाम पर
गाँव होखी सुख के संसार।

www.bhojpurisahityangan.com

भूख का मारी

आजु ले आगि में जरल, आगि का जारी
भूख जनमे से देखल, भूख का मारी।

खेती जग ह भइया, हवन में खून के माँगे
किसान गोत्र तोहरे ह, हवन तोहे ना जारी।

हवन करत हाथ जरेला, ई सांच ह भाई
लागल रह जगि कहे, भले मिलेला गारी।

करम आ धरम एके ह, करम हाथ तोहरे
फलवा हाथ ना तोहरे, बूझऽ ई खेला भारी।

आजु ले हासिए धइलऽ, करज माथे चढ़ल
अबहूं जाग रे भाई, करज तब ना मारी।

तोहरा हाथ में ताकत, सुतऽ जनि ए भाई
राति काटि ल कसहूं, कहे ई सुत आ नारी।

किशोर के साथ सत्ता, दुख का जानस?
लूट में उनुको हिस्सा, मुए दीन आ नारी।

www.bhojpurisahityangan.com

जिनिगी आस के दिया ह

जिनिगी आस के दिया ह, बिसवास रखऽ
अन्हार भागी अंजोर भेंटी, बिसवास रखऽ।

मिजाज टनक रखऽ, रात ढ़लान पर बा
काल्हु तोहरे मुट्ठी में, बिसवास रखऽ।

ई का होता? कबले लुटाई तोहार हिस्सा?
माटी के बेटा जागी जरूर, बिसवास रखऽ।

बाबा कहत रहन, माटी के केहू ना पाई
माटिये ताज पहिराई तोहे, बिसवास रखऽ।

धुंध छँट रहल बा, मउराये जनि द मन के
आगाज दिल्ली तक पहुंची, बिसवास रखऽ।

नया अब राह बनी, सत्ता नायाब रंग के
सत्ताधारी अब तू बनबऽ, बिसवास रख।

करम प्रधान होई, किसान भगवान होई
मजदूर के राज होई, बिसवास रखऽ।

किशोर अब जगिहें, गाँव में गान होई
संसद गाँव में बैठी, बिसवास रखऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

हमार बलचनवा

सरकार से दू हाथ करे चलल रहे
हमार बलचनवा
ओकर संघर्ष के मुद्दा रहे
बिजली, पानी अउर रसायन
साथे फसल के दुगना दाम

सरकार आ सरकार के गठित समिति
ना सुनलस बलचनवा के बाति,
बाढ़, सुखाड़ के मारल गांव के
कहलस दुर्दशा के बाति
कान पर जूं ना रेंगल सत्ता के
विपक्षी रखलस पीठ पर हाथ

राजनीति में पैंठ बनवलस
चाचा, भइया काका कहके
नेता बन गइल बलचनवा
किसान हित के सौदा करिके
ओकरा लागल कुर्सी चस्का
चुनाव लड़ि गइल सत्ता दल से

बलचनवा बन गइल विधायक
भुला गइल आपन गंउवा के
पटने दिल्ली अब भावेला
जाति के बल धौंस दिखावे
सुनल ना चाहे किसान-किसानी
खूब करे मन के मनमानी।

www.bhojpurisahityangan.com

किसान - १

हम किसान
असरा के घोषणापत्र
पाकिट में ले घूमत बानीं
एगो अगहनुआ भोर के आस में

जस के तस बानीं आजुले
कुछ ना बदलल
अगहन भादो हो गइल
आंखिन के सपना बहा ले गइल
हम देखत रह गइनीं
सत्ता आ साहूकार के खेल आजुले।

❖❖❖❖❖

किसान - २

प्रतिरोध
फुफकार
के भाषा समझेला सत्ता
हमार चुप्पी के
कायरता समझल गइल

माटी के पूत
माटी जस चुप रहल
बदलाव के उम्मीद से,

www.bhojpurisahityangan.com

हम आपन लड़ाई
चुप रह जीत लेल चहनीं
मदारी हमार रीढ़ पर प्रहार कर
प्रलोभन में फंसाके
कुचल देलस
अगहनुआ भोर के आस।



लोक सच्चाई

समझदार
दुनियादार
चौकीदार
साहूकार
सब लोक सच्चाई के बुझेला
बाकिर ओकरा के स्वीकारे ना

लोक के सच्चाई से दूर रहे के
आजु समझदारी कहेला
उहे ऊ सुनेला
लोकि सच्चाई के साथ चलके
मुसीबत मोल ना लेल चाहे।

www.bhojpurisahityangan.com

मदारी

मदारी
बन्दर के चाह/ आह
तमाशबीन के भावना
ना समझे

ओकर नजर रहेला
तमाशा के रकम पर
डकार जाला सब मुनाफा खुद

लोकतंत्र के नेतृत्व
मदारी नीति के पोषक बनि
डकार रहल बा
आम जन के हिस्सा।

❖❖❖❖❖

गंवई परिवेश

किसान के बेटा
आ मजदूर के खेत आ खेती से दुराव
गाँव से पलायन

बगइचन के कटाव
खेतिहर भूमि के
उद्योग आ विकास खातिर अधिग्रहण

www.bhojpurisahityangan.com

बाढ़, सुखाड़
रसायन के भरमार
बिगाड़ देलस
गंवई पारिस्थितिकी
अइसना में
कइसे फूटो चैती
आ फगुआ के बोल।

कुकुर बिलाई

हर चउराहा पर
गलियन में
कुकुरन के गोल
डेरा जमवले बा

पांव दबले
नजर बचाके
बिलाई चुपे निकलल चाहेले

नोंचे-झपटे खातिर
तइयार बइठल
कुकुरन से ना बच पावे,
कांच मांस के गंध
खींच ले जाला
कुकुरन के नजर
बिलाई के ओरि।

www.bhojpurisahityangan.com

किसान - ३

किसान के जिनिगी
देह, मेहरारू आ धरती जस
जतने खोदब
ओतने दुख

किसान के जिनिगी
जेकरा में सुख ना
खाली भूख

किसान के जिनिगी
कर्मयोगी जस
जे गावेला गीत
सुखों में, दुखों में।

❖❖❖❖❖

ले - दे

हमनीं का ले पढ़ल बानीं जा
दे ना
धरती, जंगल, जलाशय
बिला रहल बा तीनों
लूटा रहल बा पहाड़

चारों के आंखि मूंदके

www.bhojpurisahityangan.com

मनई कर रहल बा दोहन
दोहन के आपन अधिकार समझ

कबो त बइठ के सोचीं
आजुले ओहनी से लेले बा आदमी
देले बा का?



संकट

धरती के संकट
किसान के संकट
देश के संकट
प्राण के संकट

देखि आकाशवाणी भइल
अबहूं चेतऽ रे मरदे
ना त ना रहबऽ सं
तोहनी के
ना रही विकास के कहानी।

किसान - ४

किसान के घरे
हल बैल के जगह
दुआर पर खाड़
ट्रैक्टर लउकत बा

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर किसान के माथे बइठल
कर्ज ना भागल
ऋणग्रस्तता कायम बा

कर्जवाद
लूट खसोट के मुक्कमल इंतजाम
बाजारवाद के वरदान
ले रहल बा किसान के जान।

❖❖❖❖❖

जमीन

'सारा जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा'
के धरती
जानल जात रहे
आपन शस्यश्यामल रूप खातिर,
किसान रहे देश के शान
भारत के पहचान
खोखला विकास
बेवसथा बेलगाम
सत्ता पहलवान
खुला पैगाम बा
आम जन के तबाही के

प्रतिफल
शस्यश्यामल जमीन पर

www.bhojpurisahityangan.com

धान-गेहूं कम
उग आई खाली आँख
जे उठाई सवाल
हमनीं से,
ओह सवालन के गरमी से
उठत भाप में
आम जन के लहूलुहान मन
तन के चीख भरल रही
जे बादल बनि
लौट आई जमीन पर
सैलाब बनि
जेकरा में डूब जाई
सत्ता आ बेवसथा
साथे हमनियो के

ना होखी केहू
दू बूंद आंसू बहावे वाला
ना कब्र पर
दू गो फूल चढ़ावे वाला

गाँव आ शहर

हमार गाँव पैदा करेला
अनाज, फल, दूध, सब्जी

हमार जंगल पैदा करेला
लकड़ी, औषधि, हवा, पानी

हमार पहाड़ पैदा करेला

www.bhojpurisahityangan.com

माटी, गिट्टी, पत्थर, कोइला

हमार नदी पैदा करेला
पानी, मछरी, बालू

तोहार शहर पैदा करेला
धूलि, धुआं, कचरा

तोहार सरकार पैदा करेला
करज, कर, नियम, कानून

उत्पादन हम कइनीं, उत्पादक तू बन गइलऽ
हानी हमरा माथे, मुनाफा तोहरा साथे

तहरा ईंट-ईंट में पइसा, हमरा आंगन करजा
तू ठहरलऽ मुंसिफ, पटवारी, हम दुख के मारल परजा

तोहार राह पर बढ़ि चलल बा, हमार बलचनवा
करजा, कानून गरदन दबावे, कबले बांची किसनवा।

www.bhojpurisahityangan.com

खेती-किसानी

समाज में फैलत
पूंजीवाद के पैर के
अगिला निशाना के?

रोड पर बइठल किसान के जुबानी
किसान दमन के कहानी
किसान विरोधी नीति
कह रहल बा कि
ऊ दिन दूर नइखे
जब किसान अपने खेत के होखिहें
बंधुआ मजदूर

खेतन के उत्पाद पर होखी
कारपोरेट आ अमीरन के अधिकार
जेकरा पूंजी के बले
खेत में लहलहाई फसल

पूंजीवाद के अगिला शिकार
केहू अउर ना होखी
होखी खेती-किसानी।

www.bhojpurisahityangan.com

बरगद

उखड़ गइल
बरगद के झखाड़ गाछि
जड़ि से
जेकर छांह में परिवार पलल-बढ़ल

ओकर सोरि आ तना में
मँगरा लाग गइल रहे
भीतरे-भीतर खोंखड़ हो गइल रहे ऊ
बड़का-बड़का झंझावात सहे वाला ऊ बरगद
हवा के एगो कमजोर झोंका से भहरा
पड़ल रहे आँगन के बीचे

महेन्द्र काका कहले कि
आपन सवांगिन के माटी से कटत देखि
बाबा टूट गइल रहन,
सांचों ऊ बरगद रहन
परिवारे ना टोला मोहल्ला खातिर,
उनुका चारों ओरि खड़ा
घर के मरद-मेहरारू के
उनुका ना रहला पर बुझाइल
बाबा बरगद रहन
बरगद
आ हमनीं का मँगरा।

www.bhojpurisahityangan.com

जड़ आ जमीन

परदेस ना
देस में तोहार जड़ बा
देस के जमीन में गड़ल बा
तोहार जड़
देस के परिवेस आ जमीन से
हवा, पानी, अन्न
माई के ममता आ बाबू के दुलार
पाके तोहार ई देहो खाड़ बा
आ जड़े आ जमीन से
तोहार परदेसो खाड़ बा।

दादी-नानी के कहानी
खाली कहानी ना रहे
तोहरा भीतर समझ आ शक्ति भरे के
जड़ जमीन रहे,
जमीन पर खाड़ खेत, खरिहान
तहरा भीतर हलफा मारत बा
गाँव भीतरे गीत गावत बा
मचान पर चढ़ि दूर तक देखल जाला
बाकिर फेरू उतर के
जमीने पर नू खाड़ होखल जाला।

मंटो के' टोबा टेकसिंह' से
सीखऽ बुझऽ जड़ आ जमीन के मूल्य
ऊ आपन जड़ आ जमीन से उखड़ल ना चाहत रहे

www.bhojpurisahityangan.com

तूहूं जनि उखड़िहऽ
ऊ अंतिम सांस नोमेंस लैंड पर लेटल रहे
बँटवारा ना देखल चाहत रहे
तूहूं देस-परदेस के बँटल दुनिया में जी रहल बाड़
एहिजा नोमेंस लैंड नइखे
एगो के चुने के बा
परदेस भा देस
तू देस के चुनिहऽ
जहाँ तोहार जड़ आ जमीन बा।

❖❖❖❖❖

गाँव

गाँव खाली मनई के बसाहट ना ह
गाँव के आपन एगो अलग संस्कृति होला
आजु ऊ संस्कृति बिला गइल
गाँव से परा गइल

विकास यात्रा आ बाजारवाद के माथे सब दोष मढ़ल
आपन करनी के तोपल-झांपल ह
समय के साथ बदलाव होला
ओह बदलाव के धार में आपन संस्कृति बहा देल
कसहूं उचित ना होखे
गाँव आपन धरम भूल नसा गइल

जनि खोजीं गाँव, अपना गाँव जाई के
ना वरगद के छांव, ना बाबा के गाँव

www.bhojpurisahityangan.com

ना भेंटाई गाँव
ना गाँव के मनई
सब के सब ओरिया गइल
अउर त सब बाति छोड़ीं
माई भाषा आपन रूप देखि लजा गइल

तब त बाबा कहत रहन
धन गइल कुछ ना गइल
संस्कार, संस्कृति घर से गइल त
ऊ घर, घर ना रहल, घरवे बिला गइल।

❖❖❖❖❖

ग्लोबल गांव

ना बरगद के छांव
ना बाबा के गाँव
चारों ओरि पसरल कांव-कांव
ना सखी ना हमरा ना चाहीं
अइसन ग्लोबल गाँव

ना बिसरे ठाकुरबाड़ी
ना टमटम के सवारी
पों पों चहुंओर गूंजत
बा पइसा खातिर मारामारी
गजबे ग्लोबल गाँव

अँगना बाजार बइठल

www.bhojpurisahityangan.com

बाजार में मुरारी
वोट खातिर राजा जी
राम के पुकारीं
सगरी बा लउकत
खाली बेरोजगारी
वाह रे ग्लोबल गाँव

भागत विकास रथ
खेतवा बधारी
जंगल के बीचवा में
कारखाना भारी
दरकत पहाड़ देखि
रोअस बनवारी
इहे ह ग्लोबल गाँव

माई भाषा कगरी
अंगरेजिये में गारी
घर से भगवले बेटा
बाप महतारी
कलजुग बा चरम पर
कहले सुखारी
जय हो ग्लोबल गाँव

फोर जी आ फाइव जी
भावेला सभके
रीयल छोड़ि मनई देखे
रील में बढ़के
चाल ह बाजारवाद के

www.bhojpurisahityangan.com

काटत बा सटके
बाजार ह ग्लोबल गाँव

राजा जी के भावेला
सेठवो के भावे
ग्लोबल गाँव के गणित
जन के ना भावे
जन सुराज के जगहा
बाजार बइठावे
ना चाहीं ग्लोबल गाँव।

❖❖❖❖❖

पानी बेपानी

गांव रहे पनिया-पनिया
लोग रहे कम

पानी संचित कइल
लोग के
लोक के
रहे धरम
संस्कृति में शामिल

अपनो खातिर
माटी खातिर
आ जैव विविधता खातिर

www.bhojpurisahityangan.com

पानी संचय अधिका
खपत कम
दोहन कबहूं ना

गाछि बिरिछ कटते
जलस्रोत सूख गइल
दोहन अनियंत्रित

पनिया-पनिया लोग
बेपनिया हो गइल।

❖❖❖❖❖

जल भंडार

सीमित प्रकृति संसाधन
बेतरतीब दोहन

जल, जंगल, जमीन
बोलेला ना
ओकर मूक भाषा
ओकर दुख
हमनी के समझे के होखी

जल भंडार
खत्म होखे वाला बा
कटत जंगल के रफ्तार

www.bhojpurisahityangan.com

जमीन के कराह आ पुकार
हमनीं के आज ना सुनब जा
त काल्हु होखी
हमनीं के चहुंओर अन्हार

भागत जलस्तर जस
भाग जाई
जीवन प्रकाश
हमनी से ढेर दूर।



पानी

पानी ना रहल आँखिन में
ना रहल ताल-तलैया
आहार-पोखर में,
सूख गइल नदी सब

आँखिन के पानी मरते
छूट गइल
बड़-छोट के लेहाज
मर गइल संस्कार

पानी सूखते
गांव, माटी आ मनई
तीनों मू गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

भाई-भाई

हमरा गाँव के पूरब
मस्जिद
पछिम में शिवाला

मस्जिद से थोरिके
हटिके
काली स्थान, सूर्य मंदिर

पोखरा के पछिम पीड़ी पर
कबुरगाह
उत्तर वारी पीड़ पर
श्मशान घाट

कहाँ कवनो आपसी लड़ाई
हिन्दू-मुस्लिम, भाई-भाई

जब राम के नांव पर विष बोआई
कहवाँ रह जाई, नाता भाई-भाई।

ईश्वर के चुप्पी

धर्म सत्य के
राह छोड़
राजनीति के शरण

www.bhojpurisahityangan.com

धर्म गुरु के
कुर्सी से आसक्ति
बाजार में बइठकी

धर्म मजहब
वोट के माध्यम

ईश्वर के चुप्पी
प्रश्न चिन्ह
खड़ा कर रहल बा
भगवान पर।

नोनार के बिगड़त बुनावट

1–

आरा सासाराम लाइट रेलवे लाइन
के किनारे बसल
भोजपुर जिला के
एगो बड़ गाँव,
बड़ गाँव एह से कि
सात पट्टी के गाँव
तीन गो टोला त गाँव से दूर
बसल रहे
आजु माखन के टोला त
बेचिरागी हो गइल

www.bhojpurisahityangan.com

पीरो तहसील में
पैंतीस सई बिगहा जजाति के
किसान बहुल गाँव
अधिकांश खेत के स्वामित्व
भूमिहार भीरी रहे
तब के साठ घर
भूमिहारन के पास,

बस्ती के भूमिहार बहुल
ना कहि के किसान बहुल
के संज्ञा देनीं
काहे कि
दूसर सब जाति के लोगों
किसानी से जुड़ल रहे
दूसर सभ जाति माने
राजपूत छोड़िके लगभग
सभ जाति
उहो बहुतायत में

हमरा गाँव के पूरब
मस्जिद
पछिम में शिवाला
मस्जिद से थोरिके
हटिके
काली स्थान, सूर्य मंदिर
पोखरा के पछिम पीड़ी पर
कबुरगाह

www.bhojpurisahityangan.com

उत्तरवारी पीड़ पर
श्मशान घाट
कहाँ कवनो आपसी लड़ाई
हिन्दू-मुस्लिम, भाई-भाई।

एगो बरियार पहचान
गाँव के
गाँव के पूरब के
बावन बिगहा के पोखरा,
आहर गाँव के तीन तरफ से,

बड़ पोखरा इकलौता
माल-मवेशी से लेके
मनई तक के
सालों भर के
अनेकन काम खातिर उपयोगी
इहाँ तक कि
छठ-एतवार के एकमात्र
साधन

गाँव में दूइए गो त मेला
लागत रहे
चइती आ कतिकी छठ के
पोखरा पर
आ ईद के दिन मिलकी में
मस्जिद त
आ दूनों मेला साम्प्रदायिक सौहार्द के

www.bhojpurisahityangan.com

अनोखा नमूना
जहाँ भीड़ में ना अलग कइल
जा सकत रहे
वैद्यनाथ आ नूरबास के,
दूनों के माथे गमछा के पगड़ी
आ हाथ में डंटा रहे
बदन के ऊपरे सेंडो गंजी
आ नीचे चान छाप लूंगी

साम्प्रदायिक सौहार्द रहे
कि तजिया उठत रहे
कमकर टोला के चउक से
आ हिन्दू टोला से होके
घुसत रहे मुस्लिम टोल,
हर हिन्दू जमींदार परिवार के
दुआरे रुक के
कलाबाजी दिखावत
जेह में हिन्दू नवही त छोड़ीं
प्रौढ़ शिवनारायण पहलवान
आ जई बाबा दिखावत रहन
आपन लाठी, भाला, तलवार के
कारनामा

गाँव के मुख्य पेशा
किसानी
किसानी अकेला के चीज ना ह
मजूर आ किसान के

www.bhojpurisahityangan.com

साझा उद्योग
आमद में सबका आपन शेयर
बिना केवाला के
बनिहार के सवा बिगहा पर स्वामित्व
रोपनी, कबरिया के मजदूरी
पवनियन के
कटनिहारन के हिस्सा में
बोझा-पंजा
पंडित जी के अंगऊंग-सिधा
दक्षिणा में नगद रोकड़ा
किसान के खेती
सांचो सहकारी स्वरूप

शोषण तनिको ना रहे
सभे चाचा, काका, भइया, बाबा
आजी, इया, काकी, चाची
रिसता के ई बंधन
आ प्रेम भरल अपनापन
ना जनमे देलस
नक्सलियन के जड़
गाँव में
जबकि बगल के पूरबहुता
जरत रहे
नक्सलवाद के आग में,
आ रणवीर सेना ना कर
पवलस आपन घुसपैठ
गाँव में

www.bhojpurisahityangan.com

गाँव के बुनावट में
तंतु लेखा
प्रेम के बसाहट रहे
रिसता के गरमाहट रहे
परिवेश में अइसन नमी रहे
कि मन-प्राण भींग जाए
संबंध में बहत तरलता
जेकर छुवन से
अंतर में जीवन नाद के
अनुगूंज भर जाए
भरो काहे ना
गाँव के बधार में
ऊखि के रस के मिठास
महुआ आ आम्र मंजर
के मादकता
कोइल के कुक
सरसों, गेहूं के पैसार
कनकजीरा के सुवास
चइता के हुलास
फगुआ के राग
कजरी के तान
धरती से उठत
सौंधी सुगंध से
परिवेश में बरिसत रस
आ पुरवइया बयार साथ
बहत गंध के झकोर

www.bhojpurisahityangan.com

विलक्षण रहे गाँव के
परिवेश
ई देखि मन कबीर के
पद चोरा कहब
'मेरे गाँव का रंग
मजीठ है।'

लोगों रहन एक से एक
दिवान जी
माने जग नारायण लाल
उर्फ मुंशी जी
जेकरा बिना कवनो घर के
झगड़ा ना फरिआई
प्रेमचंद के 'पंच परमेश्वर'
के साक्षात नमूना
रहन भाई

नन्द पधेया
एगो अजगुत साढ़े छव फुट
के भारी देह धारी
एक धोती, एक कुरता में
नोनार से कुटुम्बा ले
फइलल जजाति के
प्रबंधक
बिना खर्च के,
तन के कपड़ों फिंचल
पाप समझत रहन

www.bhojpurisahityangan.com

दूसरे के दुआर स्थाई
आवास रहत रहे

हमार बाबा
पांच फुट के देह
आरा कचहरी से
मुख्य सचिव तक पहुंच
सतरहो जिला में संबंध
गाँव के कानूनी सलाहकार
वकील से ढेर ज्ञान
आपन इज्जत के शान
शिव मंदिर के चार बिगहा
के मुकदमा में
आपन धन फूंकी
कइले
जीत के एलान

केशो काका
बड़का रामायणी
जवार तक में
एगो अलगे पहचान
गीतो पर देस
सुंदर व्याख्यान

त्रिवेणी माट्साब
बड़का काका
के अलगे पहचान,

www.bhojpurisahityangan.com

कड़क अनुशासन प्रिय
ठसक कि
मास्टरों लोगिन के देखि के
लागे पिसाब
जाड़ा, गर्मी, बरसात
हाथे छाता रहे पहचान

पंडाइन काकी
देवी जी
गाँव के पंडिताइन
गाँव के प्राइमरी स्कूल में
शिक्षिका
कबो हाथ खाली ना
रूल चाहे, कनइल के छड़ी
जब बुला देस कवनो
लइकन के
उहाँ तक पहुंचे के पहिले
पैंट हो जाय गील

लाला के दालान
नवही ले बुजुर्ग तक के
दुपहरिया के ठांव
सांझि खा पछेयारी पीड़ी
खेल के मैदान,
खेल के बाद
महुआ के सोरि पर
गाँव से लेके राजधानी

www.bhojpurisahityangan.com

तक के बखान
प्रेम भरल परिवेश में
देत सभे आख्यान
सभे बुझे हमरा से बढ़िके
नइखे केहू महान।

2–

छोटी लाइन के जगह
बड़ी लाइन आ गइल
स्टेशन हाल्ट हो गइल
सिंगल लेन कोलटार के सड़क
बदल गइल टू लेन में
गांव के गली के
रूप रंग बदल गइल
साथे गाँवो के

बदलाव के हलचल
दुनिया भर में बा
परिवेश, पर्यावरण बदल गइल
त गाँवों पहिले जस कइसे रहित
सबकुछ ओइसने कइसे रहित
जे आज से चालीस बरिस पहिले रहे,
समय बदलल, गांवों बदलल
गाँव में आइल बदलाव
बढ़िया लागेला

www.bhojpurisahityangan.com

बदलाव के लेके मन में
एगो रूढ़ी बा बइठल
'जे पुरान बा, उहे श्रेष्ठ बा'
एही से ई सुने में आवेला
पुराने चाउर पंथ पड़ेला
इहे आपन मानसिकता देखि
जौन एलिया के कहल बाति
इयाद आ जाला
'जो गुजारी न/ जा सकी हम से
हमने वो जिंदगी/ गुजारी है।'

बाकिर बदलाव जरूरी बा
ना त दुनिया के दउड़ में
पिछुवा जाई मनई
इक्कीसवीं सदी में आपन
पहचान ना बना पाई
बदलाव गति देला
बाकिर ई का
बदलाव के साथे
गाँव के बुनावट बदल गइल
मनई के भाव के साथे
बरताव के तौर-तरीकों
साझा संस्कृति
बिला गइल
भीड़ में आजु मनई अकेला

www.bhojpurisahityangan.com

आपस के प्रेम में
सेंह लागल लउकल
मनई के प्रेम
जे एक दूसरा से
कई तरह के जटिलता
के बावजूद जोड़ले रहत रहे
ऊ प्रेम में दरार लउकल,
आ लउकल आपसी
भरोसा के आभाव,
विश्वास... भरोसा..
के बिना प्रेम कहाँ से भाई?

नोनार से दूर रहि के
नोनार से दूर ना रहनीं
जब समय मिले
दउड़ल चल जाईं
दू-चार महीना पर
दू-चार दिन खातिर,
बदलाव नजर आवे
बाकिर बदलाव समझे के
पहिले लौट आईं

गाँव से लगाव
हरदम रहल
बाकिर गाँव छोड़ि
शहर बस गइनीं
गाँव में घर रहते

www.bhojpurisahityangan.com

शहर में निवास
काहे बनइनीं
एह प्रश्न के सुभहित
उत्तर ना दे पइनीं
आजु ले

संजोग मिलल
एह बेर गाँवे
दू माह रहे के
गाँव में आइल बदलाव के
बुझे के
उमस भरल गाँव के
परिवेश के पढ़े के,
बदलल परिवेश के
कारण कुछुवो होखे
सच्चाई इहे रहे
गोतियो-देयाद के घर
आपन ना लागल
दूसर के का कहीं

ना कतहीं चौपाल लागे
ना नौटंकी के ताल बाजे
ना बिटियन के कजरी
ना घाटों, पीड़िया के गीत
बदलल लागे सभ विध
गंवई संस्कृति आ संस्कार,
सवासिन के सवनपुरियो

www.bhojpurisahityangan.com

आ माई के फेरवन के
भाई में लागे बांट
ई देखि बाबूजी उदास,
कहे के रह गइल रहे गाँव
शहर से ना रहे कम कांव-कांव,
आजानो के गूंज
आ आरती के गूंज में
आपसी प्रतिस्पर्धा
दूनों कौम के बीच
बढ़त दूरी के
करत रहे बयान

भाई भतीजा के रिसता में
मिठास ना रहल
कारण भाई सब के स्वार्थ
तबहूं गाँव के मोह
कहाँ जाए के नाम लेवे
जन्मभूमि रहे
हमार हाल उधो वाली रहे
उनुका ब्रज ना बिसरत रहे
हमरा नोनार
इहे जन्मभूमि के ताकत ह

बदलाव के एगो बड़ कारण
अपनन से दूरियों बा
जहाँ रिसता खाली लेना
पढ़ि लेले बा

www.bhojpurisahityangan.com

बाजार घरे बइठ गइल बा
रिसता खाली पइसा से
लिपट गइल बा
त रिसता के सार्थकता
कइसे रही
एही कारण
आपसी भरोसा टूट गइल
प्रेम सूखा गइल
गाँव के

गाँव के अतीत भुलात ना रहे
बदलत तस्वीर देखि सुहात ना रहे
एह बिगड़त गाँव के बुनावट में
गाँव के लोगिन के जीवन के
अनेकन इच्छा दबल-कुचलल रहे
अनेक त्रासदी जनम गइल रहे
आपसी प्रेम के गला घूंटि गइल रहे
अपनापन के नमी समाप्त हो गइल रहे
गंवई जीवन के जमीन पर
बंजर उग आइल रहे
नागफनी भरल

गाँव के उदासी के
उमस भरल परिवेश के
आपसी क्लेश के
माहौल में
बलभद्र के रामकिसुन

www.bhojpurisahityangan.com

प्रमोद कुमार तिवारी के बरधा
नइखन लउकत गाँव में,
पहिले बरधा दुआर के शान रहे
किसान के आर्थिक पहचान रहे
बरधे नइखे त
बैलन के टुनटुनिया कइसे सुनाय

इयाद आ गइल
जितेन्द्र कुमार के कविता
'मामा जब सपनालें
उनका कान में बैलन के घंटी टुनटुनाला।'
❖❖❖❖❖
'खाइ के बइठिहे स बैल
मामा ओहनी के सींघ सुहुरइहें
ओकनी के गरदन के लोर छुअल
उनुका जिनगी के सब से बड़ सुख रहे
आज उहे बैलन के खूंटा उदास बा।'

बरधे ना रहलन स तब
बैलन के लोर
छुवे के सुख कहां से भेंटाई
मामा के,
बरधा सवांग रहन स
परिवार के
ताकत रहन स गाँव के

मशीनीकरण के प्रभाव

www.bhojpurisahityangan.com

किसान पर कर्ज के भार
गाँव पलायन के शिकार
मनोजवा, गोरख, आनंदी, महेशवा
के त बाति का
सियाराम भाई के दूनों लइकन में से
एगो पंजाब त एगो सूरत
भइया भउजी बाड़े तब ले
घरे सँझवत दिखत बा
फेर त हमरे लेखा महीना दू महीना पर
देवता घर में दिया जरी

गाँव के हालात देखि
सुनील पाठक के कहलका
इयाद आ जात बा
'सतम भइल खेल'
तब त मनोजवा, महेशवा
अंजलिया, नन्दा बहू बोलवलो
पर नइखी सं आवत
पाठक जी के बुढ़िया के सराप
गाँव के लाग गइल बा

पइसा से संबंध,
खेत आ माटी
जोखे के चीज ना ह
लोग ई भुला के
बाजारवाद के चक्कर में

www.bhojpurisahityangan.com

जोखे लागल संबंध आ माटी के
पइसा से
जे खा गइल प्रेम, भरोसा
साझा संस्कृति
आ बदल देलस गंवई परिवेश
गाँव-गाँव ना रहल
हवा, पानी, आँगन, चुहानी
सब बदल गइल
नोनारो के बुनावट बिगड़ गइल

सांचे नूं ह हर चमकत चीज
सोना ना होखे
मृगतृष्णा का होला जानत रहीं
तबो शहर के लुभावना रूप
खींच ले गइल
गाँव में चमक बढ़ल लउकत बा
बाकिर ओह चमक के पीछे
छुपल बा भरोसा के टूटल पुल
प्रेम के सूखल पोखरा
हमार नोनार के परिवेश में बरिसत
प्रेम फुहार के जगह
ले लेलस आपसी दुराव
तबो कहात नइखे
कइसे कहीं नोनार के
बजर परो तोहार पेआर आ दुलार के।

www.bhojpurisahityangan.com

बाजार

चुरा ले गइल
धान, पान, मुस्कान
सून कइलस
गाँव घर जवार

कर देलस
तार-तार रिसतन के
हँ! बाजार।

❖❖❖❖❖

डर

अभाव
हमरा खातिर माने
ना रखे
किसान पूत हई
हमहूं किसान,

अभाव त हमार जिनिगी के
दूसर नाम ह
अभाव ना मार सकी हमरा के
बाकिर डर
जे घर बनावत जा रहल बा
मन में
ओकरा से बड़ी डर लागेला।

www.bhojpurisahityangan.com

माटी के सुवास

हमरा नइखे मालूम
काहे?
बाकिर असीम सुख दे जाला
मन के
केहू गाँव, घर, टोला के
अनायासो घरे आ जाला

आवे वाला अतिथि में
खाली एगो मनई ना
गाँव जवार
स्थानीय बाजार
खेत बधार
चइता आ फाग के राग
काकी भउजी के अनुराग
लउकेला

बुझाला इलाका के मनई ना
गंउवे उठ के आ गइल बा
शहरिया में हमरा घरे,
अतिथि चलियो गइला के बाद
छोड़ जाला
बसमतिया चाउर के सुगंध जस
गाँव के माटी से उठत
सुवास।

www.bhojpurisahityangan.com

नकाब

मनई
खोज रहल बा
मनई के

कहाँ भेंटाता?
एगो मुक्कमल के कहो
अधूरो आदमी
सभे त पहिर लेले बा
नकाब
आ उहो बदल लेता
हर चउराहा पर।

❖❖❖❖❖

बाजार खातिर

बांचल रही
सबकुछ ओरा गइला के बादो
बहुत कुछ

समय निगलत जा रहल बा
अपने दिहलका
परिवर्तन त समय के नीति ह
बाकिर समय छुपा के रखेला
बहुत कुछ

www.bhojpurisahityangan.com

अपना गर्भ में
लोक खातिर, काल्हु खातिर

आदमी त आदमियतो खा गइल
बाजार खातिर
खो रहल बा संस्कृति आ संस्कार
बाजार खातिर
ग्लोबल बने के चक्कर में
लोकल भोकल ना बन पाइल
बाजार खातिर

'मेक इन इंडिया'
रियल में कम, रील में अधिका
गजबे ढा गइल
ई जुमला ना ह रे भाई
सांच ह
भारत पछेया में उधिया गइल

तबहूं ऊ आगि बांचल बा भीतर
जज्बा बांचल बा
जे लोक के जगाई
देश के बचाई
पुरवइया रंगत दिखाई
जय भारत, जय भारती
सभे गुनगुनाई।

www.bhojpurisahityangan.com

सपना

सपना हमहूं देखले रहीं
बढ़िया दिन के सपना
उहो दिन में,
देखले का रहीं
देखावल गइल रहे
देखते देखत बिला गइल

सपना हमहूं देखले रहीं
आनाज के दाम दूना मिली
योजना रहे सरकार के
योजना कागज में भुला गइल
करमजरू किसान के
खेतवो छिना गइल

सपना हमहूं देखले रहीं
पंचाली हम ना बनब
ना उघारल जाइब भरल सभा में
बाकिर औरत के दुख केहू ना बूझे
दिने में लंगटे घुमा गइल
ई कइसन दिन आ गइल

सपना हमहूं देखले रहीं
पढ़ि-लिखिके साहेब बनब
ई हमरे ना, बब्बो के सपना रहे
बबुआ कलक्टर बनिहें

www.bhojpurisahityangan.com

पढ़हीं में खेत बेचा गइल
चाय पकौड़ी के दुकान दुआरे पऽ खोला गइल

सपना हमहूं देखले रहीं
बड़ होके नेता बनब
रखनी बाति जब पार्टी में
प्रधान जी कहनीं वाह रे बाबू वाह
पहिले झोरा ढोअल सीख
झोरे ढोअत जिनिगी ओरा गइल

सपना हमहूं देखले रहीं
एगो बड़ साहित्यकार बने के
कवि आ कहानीकार बने के
आँखिन देखल कागज लिखनीं
नाम, जाति के नाम जुड़ा गइल
हमार नांव साहित्य से छंटा गइल

सपना हमहूं देखले रहीं
गाँव में सपना के बाति आ गइल
मुखिया जी कहनी
सपनो औकाते अनुरूप ठीक होला
ढेर जनि उड़ बबुओ!
हमार सपना जागे के पहिले लुटा गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

मालपुआ

मलुआ के दुआर पर बइठल
कलुआ के माई से
कलुआ कहलस
माई-माई मालपुआ का होला,
माई के ई सुनि
आँख लोराइल
मन के धीरज धराई बोलल
मालपुआ का होला
कइसे बताई
बाकिर सुन टहलुआ मालपुआ ना खाला
धीरे बोल ना तऽ
बबुआन चट दे गरिया दिहन
बोल दिहन कि
चेंट में नोट ना
आ वोट के बैपारी

लइका का मानो
बोलल माई-माई
मालपुआ खाइब
माई कहलस
तनी बड़ हो जो त
बाबू परदेस से अइहन
ढेर मनी रूपेया ले अइहन तऽ
अबकी सावन के पुजाई में
पुआ ना मालपुआ बनाइब

www.bhojpurisahityangan.com

खाली बनाइब, चढ़ाइब ना
तोरा के मालपुआ खिआइब

माई-माई
मलुआ रोज खाला
हमहूं रोज खाइब
ई सुनि माई खिसियाइल
चट दे दू चटकन कलुआ के देलस
कहलस
आगि जनि मूत
मलुआ के देखि
ओकरा टोपरा बा
तोरा झोंपड़ा बा
ओकर बाबू विधायक
तोर बाबू सहायक (हेल्पर)
अब तूही बताव
मालपुआ
रोज कहँवा से आई
अउरू दिहीं का दवाई?

माई-माई
तूहीं बताव
रोज कइसे भेंटाई?
माई के ना अड़ाइल
कहलस
बड़ होखि के
ढेर कमइबे

www.bhojpurisahityangan.com

दूसर के हिस्सा
लूट ले अइबे
राज पाट बदली
सत्ता में जइबे
तबले हम मुई जाइब
तोर मउगी आई
मालपुआ बनाई
अपने खाई आ
तोरो के खिआई।

❖❖❖❖❖

भोजपुरियत में दम बा

कहाँ केहू से कम बा
भोजपुरियत में दम बा।

गावे खेत बधार के
खेत खाड़ किसान के
गाय बैल बथान के
राह चलत इंसान के
राम आ रहमान के
ई का कवनो कम बा
भोजपुरियत में दम बा।

ई धरती कबीर के

www.bhojpurisahityangan.com

गोरख, मंगल वीर के
राजा भोज महान के
कुंवर जस बबुआन के
शेरशाह पठान के
सभे करत बम बम बा
भोजपुरियत में दम बा।

लोग त मेहनती बा
बावन बिगहा खेती बा
गंगा-सोन के रेती बा
क्षेत्र सुनहरा मोती बा
आँखिन के ई जोति बा
सभे पहिरले धोती बा
भोजपुरियत में दम बा।

सबके हाथ में गोजी बा
सभे इहां मनमौजी बा
देश विदेश में रोजी बा
सीमा प भरल फौजी बा
परदो बा आ गरदो बा
जे पी के हुंकारो बा
भोजपुरियत में दम बा।

लालू जइसन नेता बा
घर घर मेटा लोटा बा
नाक से बहत पोंटा बा
तबहूं पढ़े में गोटा बा

www.bhojpurisahityangan.com

शासन शीर्ष पर बइठल बा
लीटी बा आ चोखा बा
भोजपुरियत में दम बा।

अंत में एगो बात बताईं
बिन मतलबे जनि अझुराईं
पड़नी जे गलती से पाला
ऊ बूझे ना ऊँचा-खाला
यू पी बिहार में घर बा
कवना बात के डर बा
भोजपुरियत में दम बा।

सोरह आना सांच बा
भोजपुरी महान बा
भोजपुरी के झंडा लेके
देखऽ खड़ा जवान बा
सउंसे दुनिया कहि रहल
भोजपुरिया से शान बा
भोजपुरियत में दम बा।

www.bhojpurisahityangan.com

मान्यता के मामिला

कामे ना रही तऽ
जय भोजपुरी,जय भोजपुरी
कइला से
कुछ ना मिली

कामे ना रही तऽ
नाच-गान
कमर हिलवला से
आरा, छपरा, बलिया हिली
बाकिर दिल्ली ना हिली
कुछ ना मिली

कामे ना रही तऽ
भाषा आ साहित्य पर
का बतिआइब
संविधान के अनुसूची में
जगह कइसे बनाइब
आपन-आपन राग गाईं
एह गवनई से
कुछ ना मिली

कामे ना रही तऽ
त का गाइब
गाल कबले बजाइब
जंतर-मंतर पर बइठलका

www.bhojpurisahityangan.com

कामे ना आई
मिलजुल के काम बढ़ाईं
कामे गिनाई
दोसरा के गरियाइब तऽ
कुछ ना मिली

काम ना रही तऽ
काम ना रही तऽ
का कइले बाड़ऽ
तूही बतावऽ कवन काम चाहीं,
नाचीं, गाईं, संस्कृति बचाईं
आपन संस्कार आ इतिहास बचाईं
भाषा आ साहित्य में
उन्हनि के बसाईं
लिखीं, पढ़ीं साहित्य रचीं
माई भाषा के मान बढ़ाईं
समृद्ध संसार रही
माई भोजपुरी के तऽ
बिन मंगले ऊ सब मिली
जे रउवा चाहीं
जे हमरा चाहीं
जे भोजपुरी के मान बढ़ाई

काम ना रही तऽ
सरकार ना बूझी
भले रउवा कतनो जूझीं,
आजु ले मान्यता के लालिपाप

www.bhojpurisahityangan.com

मिलल दूर से
मान्यता के झुनझुना मिलल
खाली मुँह से
राजनीति ह समझीं
एह बात के
नेताजी के बाति में जनि अझुराईं

जरूरत पड़े लात, मुक्का, लाठी देखाईं
भोजपुरी के मान्यता
भीख ना अधिकार ह
एह बात के समझीं,
सरकार ना समझे त
वोट पर चोट करि
अंगूठा देखाईं
पुचकरला पर गाय ना पेंहाले
तो दवाई करहीं के परेला
करीं दवाई

गुप्त जी के बाति इयाद करीं
'अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है'
कुंवर आ मंगल के बंश
लोहा लेवे के तरीका जानेला
हम का बताईं
चलीं अब मान्यता के ममिला
मैदाने में फरिआई।

www.bhojpurisahityangan.com

अगुआ के दिंयका खा गइल

विकसवा आईआईटियन
महेसवा बीआईटियन
रूपेसवा एमबीए
गणेसवा पीएचडी
चार गो भतीजा घरहीं
ना जाने कई गो सरबेटा
साढ़ू के दिनेसवा अलगे
बियाह के उमिर झुराता,
सब के सब थर्टी प्लस
निजी कम्पनी में कार्यरत
आय सिक्स डिजिट में मंथली
तबो दुआर अगुआ बिन तऊआता,
दुलारो फुआ कहत रही
का रे किसोरवा
कवन दिन आ गइल
पढ़ल-लिखल कमासूत लइकन के
बियाह के आसरा देखत-देखत
हमार आँखि पथरा गइल
अगुअन के धरती निगल गइल
कि दिंयका खा गइल?

दुलारो फुआ
सब समइया के फेर ह
पुरनका दिन इयाद कर
घरे के छोड़

www.bhojpurisahityangan.com

हीत, नाता, लगुआ
सभे परेसान रहे
बेटी गाँव के इज्जत त
बेटा से बंस के विकास रहे
सादी समय प ना भइल
खानदान के बदनाम रहे
समाज पर आँखि रहे
आँखि पर समाज रहे
सादी बैपार ना
कुल के वैवहार रहे।

आपस के प्रेम रहे
ना तनिको दूराव रहे
टूटल आजु प्रेम डोर
जुटल बा अर्थ डोर
केकरो ना फुरसत बा
ना केहू के चिंता
घर-बाहर सगरो
बाजार आ बइठल,
मैरेज ब्यूरो आइल
नयका बाजार में
सादी एगो नया
कमीसन के खेल भइल
देखते-देखत लोग
अझुराइल एह बजार में।

किशोर घर के हाल देखि

www.bhojpurisahityangan.com

सादी बैपार देखि
लइकन कुंआर देखि
समाजिक बुनाव देखि
बेटी के आकाल देखि
कहेलन सराप हऽ
दहेज अभिसाप हऽ
समय रहते चेतऽ ए भाई
समम के पुकार हऽ।

❖❖❖❖❖

माई के बखरा

सुनऽ
भईया तोहरे से कहतानी
बबलूआ के माई ना मानीं
हमार बखरा अलगा कर दऽ
ऊ जिद पर अड़ल बिया
ना मानीं।

ना चुप रहबऽ
बाबू के मुअला कऽ दिन भइल बा
बरखी नइखे भइल
माई का कही?
ओकरा पर का बीती?
भाई-भाई त एक दिन अलगा होखबे करेला
तनी दम धर
बँटला बिनु का बिगड़ल जाता

www.bhojpurisahityangan.com

गँउवा का कही
हित-नाता का कहिहें,
गाँव, हित-नाता के छोड़ऽ
बबुआ
माई के मुँह तऽ देखऽ।

का देखीं माई के मुँह
दूनो पतोहिया से दू रंग बेवहार
भउजी के आँखि प बइठवले रहेली
बबलूआ के माई त उनुका
फूटलो आँखि ना सोहाले
एके घर में दू लेखा
कहाँ के न्याय ह?
तोहार बेटा डब्लू एको घरी गोदी से ना उतरे
बबलूआ के नेटो पोंछत घिनाली
कतना आँखि मूँदी?
छोड़ ई सब बात
अब गुंजाइस ना रहल
बड़ हवऽ बाँट दऽ
हमार बखरा निकाल दऽ।

ठीक बा
ना मनब तऽ
एतवार के बड़का फूफा धर्मनाथ ओझा के बोलावऽ
गाँव के दू चार गो लोग रही
जे कही से हम मानब
तूहूं मान जइहऽ
पंचायत में छिछालेदर ठीक ना होई

www.bhojpurisahityangan.com

कुछु कमी बेसी रही त कहिहऽ
हम देखि लेब।

बड़का दुआर पर
एतवार के बइठल पंचायत
दूनो पक्ष के सुन के
गोर गोटी से
खेत, घर, दुआर, अँगना बँटा गइल
बिना झंझट के सब फरिया गइल
पंच उठल चहले
तले दरवाजा के ओट से आवाज आइल
ईआ के का होई?
हम अकेले नइखीं खात
ईआ के हम कवनो ठेका नइखीं नूं लेले
कहत घूंघट में डब्लूआ के माई आइल,
पंचायत आ ईआ ई देख के ठक
ईआ के काट तऽ खून ना
कबो बड़का के त कबो छोटका के मुँह देखस
दूनों चुप
मामला बूझत देर ना लागल
माई बूझ गइली
आजु हमरो बखरा बँटाई।

बात बढ़ावल ठीक ना लागल
माई कहली
बेटा हो, दुलहिन हो
हमार चिंता जनि कर लोगिन
तू लोग नीके सुखे रहऽ

www.bhojpurisahityangan.com

हमार जिनिगी अब कव दिन के
आज ले कटि गइल, काल्हुयो कट जाई,
कहत हाथ जोड़त पंचायत से कहली
पंच लोगिन
दूनो के बखरा से एक-एक बिगहा निकालि के
मठिया के लिख दिहीं
हमार बखरा ना बँटाई
हम घरे ना जाइब
इहवें से मठिया पर जाइब।

❖❖❖❖❖

शहरी

शहर
बस रहल बा तेजी से चहुंओर
आपाधापी के जिनिगी बितावत
रोजी रोजगार के चक्कर में
रहनी शहर में
बाकिर शहरी आजु ले ना बन पवनीं
आजो नाल तऽ गाँवे में गड़ल बा।

गाँव
जब शहर पहुंचेला
माथा पर नाचत अझुरा
दाल-रोटी के भाव
फैशन के मारि

www.bhojpurisahityangan.com

श शहरी श बना देला
बाकिर भीतर के गाँव मुए ना।

रेलगाड़ी के भीड़
हवाई जहाज के जतरा
देखि बुझाला
कि कइसन छटपटाहट बा
गाँव से मिले के
शहर में बसल
'शहरी' के मन में।

साँच तऽ इहे हऽ
शहर के जन्मदाता गाँवे हऽ
एगो महानगर में
सई सई गो गाँव बसल रहेला
सभ शहरी के हिया में
गाँव जीयत रहेला
'शहरी' में जीयत गाँव
मुरझाई ना, माटी आ खून
ओकरा के जिंदा राखी
जब ले सांस रही।

www.bhojpurisahityangan.com

पुरखन के थाती

गाँव
गाँव के माटी
माई के बोली

फगुआ के टोली
बाबू के पगड़ी
नानी के कहानी
ईया के गीत

लोक बयान
लोक कथा
लोक गीत
आपसी प्रीत

सब के सब
पुरखन के थाती,
बाबा के कहल
एहनी के सांची
तब जाके संस्कार
आ संस्कृति बांची।

www.bhojpurisahityangan.com

गोल

गाँव के गोल
बाँटत रहे
घरे-घरे आनंद
दुआरे आके गावत रहे
मनावत रहे
सदा आनंद रहे एही द्वारे
सार्वभौमिकता आ प्रेम के
पाठ पढ़ावत रहे

गोल के संख्या बढ़िया गइल
गुटबाजी के प्रश्रय दाता बनि बइठल
गोल जाति-पांति
ऊँच-नीच
धरम-मजहब में अझुरा गइल,
प्रेम पाठ भुला के
आजु बाँट रहल बा गोल
नफ़रत के जहर
मानवता के गला घोंट
तूड़ रहल बा सामाजिक संरचना

गोल के खोल ओढ़ि
रंगल सियार
बन बइठल बा मुखिया
ई नइखे बुझत कि
गोल में सभे भकोले बा

www.bhojpurisahityangan.com

जे गोल के मोल ना जाने
जानेला आपन स्वार्थ
जे उड़ा ले जाई
गोल के खोल
भुला जाई
मुखिया के बोल।



चिट्ठी

चिट्ठी जनि समुझब
ई परबतिया के
जीयत जिनिगी के
सार ह
बुचना के लोर से सनल
गोहार ह
बाबू आ माई के
दवाई बिनु
बीत रहल जिनिगी
के बुखार ह,

खेती के देखित
खलिहा खेत
सावन के सुखार ह
बिपत परो सावन के
रउवा बिन

www.bhojpurisahityangan.com

भादो के रतिया के
अन्हार ह
राउर नोकरी
सवतिया छोकरी से बढ़ि के
बाकिर हमरा खातिर
बथत कपार ह,

जब ले
बहरा गइनीं
फगुआ परब ना
कटार ह
राउर चिट्ठिया
चिट्ठी ना
हमरा सूखल आ
मउराइल जिनिगी में
बसंत बहार ह
आँखिन के लोरि
नइखे थमात
थोरिके लिखलका
ढेर खुदे बूझब
ना बूझब त
इहे बूझब कि
आजु हमार संसार
दुख के बाजार ह।

www.bhojpurisahityangan.com

परिचय

हमार परिचय
काहे के पूछ रहल बाड़ऽ
मनई हईं
तोहरे जस
दूगो हाथ-गोड़-आँखि वाला

संपत्ति, पद, पेशा
हमार ना हऽ
देहियो हमार ना हऽ
खनदान आ परिवारो हमार ना हऽ
जगत पसारा सब हमार ना
मत जोड़ऽ एह सबसे हमके
जे हमार ना हऽ

हम हईं
सच्चिदानंद
जे तोहरा हमरा में
हरि-गुरु में
सब में बइठल राम रूप,
हमार परिचय जाने के होखे त
आपन परिचय जान लऽ
कुल, वंश दूनों के एक।

www.bhojpurisahityangan.com

कहां गइल?

काल्हु गाँव गइल रहीं
सुविधा बढ़ल नजर आइल
गाँव में
बाकिर मनई बदलल-बदलल
बदलल गाँव विकास के राहि बढ़त
शहर के चादर ओढ़ि
आपन रूप बदल लेले रहे
नवही तऽ लउकते ना रहन
गाँव में

काका कहले कि
नवही सब गाँव में अब कहां
सब के सब दिल्ली, सूरत, पंजाब
रोटी के जुगाड़ में, ई काहे?
प्रश्न के हमरा आँखिन में पढ़
काका कहले कि
अब के लोगिन के
माटी के गंध ना भावे
करखाना के जहर उगिलत
धूर-धुआं भावेला

ई सुनि के मन उदास हो गइल
बाकिर आँखि बधार के ओरि उठ गइल
एगो बड़ प्रश्न मन में उठल कि
गाछि-वृक्ष के तऽ गोड़ ना होखे
बधार के बाग-बगईचा कहाँ गइल?

www.bhojpurisahityangan.com

बिटिया

थरिया बाजल अंगनइया बीच
सुनि मनवा मोर अगराइल।

घर रुनझुन पायल बिन सूना
बिटिया के ललसा खूब रहे
मोर छाती देखि भइल दूना
लक्ष्मी घर आजु आइल रहे

बिटिया के स्वागत कइसे करीं
तन-मन आजु मोर बउराइल।

बिटिया से रौनक सारा घर
दू कुल के रौनक बिटिया ह
बिटिया जनि बूझ पराया घर
ई घर तोहरे त आपन ह

अँखियन के पुतरी तू बिटिया
सोचि अँखियन लोर भर आइल।

खेतवा से सीमा तक बिटिया
समसान में तोहरी पैर पड़ल
बिनु पंख उड़ान भरे बिटिया
हर सहर-गाँव ई बोल पड़ल

www.bhojpurisahityangan.com

गीधवन के दृष्टि चहुंओर देख
बिटिया मनवा मोर मउराइल।

राधा मीरा बन प्रेम पाठ पढ़ा
सीता बन दिहलू त्याग पढ़ा
काली दुर्गा तू शक्ति रूप
सचमुच तू ही नारायणी रूप

बिटिया तू गंगा जल जइसन
तोहे देखि मनवा अगराइल।



माटी के बेटा

माटी चंदन से बढ़के बा, माटी के गीत हम गाइलें
हम हईं बेटा एह माटी के, हमरो छोटे गो सपना बा।

कुछ लोग त सपना देखत बा
कुछ लोग देखावत बा सपना
हम हईं बेटा एह माटी के
अगहनुआ बिहान हमार सपना
ना दरद बूझे केहू माटी के
ई बाति कहत रहले बाबा
ना बूझी दरद आन केहू
ना पूरी अगहनुआ सपना
हम हईं बेटा...।

www.bhojpurisahityangan.com

गाँधी बाबा के ग्राम स्वराज
कवना फाइल में गुम भइल
सहजानंद घूमले गाँव-गाँव
सपना उनुको सब चूर भइल
अन्नदाता के तगमा पाके
बइठल किसान बा रोडवा प
साहुकार के चानी-चानी बा
करजे किसान के नाम भइल
हम हईं बेटा...।

ढेर कथा आजु हमरे नामे
कविता में गाथा हमरे बा
माटी गाँव के देखलस ना
ऊ गीत खेत के गावत बा
मन के बाति हमार केहू
सुने ना आपन बनकर के
आपन डफली अपना रागे
आपन बाति सुनावत बा
हम हईं बेटा...।

माथ प करजा नाचत बा
नेता के बड़का हाता बा
अफसर के देखऽ चानी बा
मोहताज त हमके पानी बा
बड़-बड़ विकास के नामे
अधिग्रहित खेत हमरे होता
चहुंओर मचल बा लूट खेल
हमरे नांवे सब लुटत बा

www.bhojpurisahityangan.com

हम हईं बेटा...।

नहर के जाल बिछल तबहूं
बरखा पर निर्भर खेती बा
बिधनो बुझस ना दरद मोर
सरकार त आन्हर बहीरा बा
किस्मत के बात करीं हम का
करीया कारिख से पोतल बा
खेतवो त ठीक से चिन्हे ना
जबसे रेहन साहुकार के बा
हम हईं बेटा.. ...।

www.bhojpurisahityangan.com

सावन में ससुरारी

धनिया के कहलो पर भइया ना मननीं हम बाति
संगे उन्हुका साथे नन्हका, पहुंच गइनीं ससुरार
मुंह के रंगत उड़ल सार के,ससुर के मरलस काठ
सासु चउखठ बइठ अलोता पीटे लगली कपार।

पानी पीये के मिलल बताशा,केहू ना पूछलस हाल
ससुर कहले नीके अइनीं, चलीं बधारी मेहमान
सासु सुन के ससुर से बोलली तनिका धरीं धीरज
काल्हु से रोपनी पर जइहें, आराम करीं मेहमान।

आंगन जाते गला से लगली साली सरहज हमरा
भुला गइनीं सार ससुर के कइल बेइज्जती लफड़ा
घर में घरनी हम दुआरे सिस्टम समझ ना आइल
भोरे बात बुझाइल हमरा तब खोजे लगनीं कपड़ा।

लूंगी देत ससूर जी कहले, पहुना आज पहिरोपना
चलीं बधारी ओहिजे आई पानी पीये के चखना
खेत पहुंचते कहले ससुर जी तनिका बिया कबारीं
सुखारी आजु आइल ना, घायल बा ओकर टखना।

भूखले पेट में चूहा कूदे, बुझत ना रहे ई केहू बतिया
सार के देखि कदम तर गइनी, खाये के मिली पोठिया
नून पियाज संग चना चबेना, पानी पीये के गुड़ भेली
देखि मन त झुलस गइल आ जा सुतनी हम खटिया।
दिन काटि जब घरे लवटनीं, सरहज देखि मारे मुस्की

www.bhojpurisahityangan.com

घरनी बइठल बरतन मांजत, देखि साली लेवे चुस्की
पड़ल इयाद बाबा के बतिया, मथवा जाला साथे
पीटत कपार ससुरार में राति के, किशोर लेले सुसकी।

एक किनारे ले जाके घरनी, कहली बात बुझाइल
मना कइनीं त मननीं ना, रउवा अइनीं बड़ी धधाइल
साली,सरहज ना केहू आपन, झूठो के लगुआ नाता
सार लेके बाइक बा भागल, गाँव से भइल लापता।

सभे बा सुतल भागीं गते, लेके माथ पर गठरी
पीछे से भइया संगे आइब, लेके हम गाजा मठरी
गोड़ चांपी के चलनी चुपे जब,नींन ससुर के टूटल
चोर बुझके मरले डंटा, टूट गइल हमार टंगरी।

टांगि के खटिया गांवे अइनीं, बाबू दिहले गारी
काहे नाम हंसावत बाड़ऽ, सावन में जा ससुरारी
सुनिके कान पकड़ के कहनीं गलती अब ना होई
हम ना जाइब अब ए दादा, सावन में ससुरारी।

www.bhojpurisahityangan.com

गरीब

गुलाब काँट से भरल, जिनिगी दुख के गठरी
काटे ना कटे दीनवा के दिन रे भाई।

सरकार भइल जालिम, सुने ना मोर बतिया
काटि रहल बा चानी, सेठवन के देखऽ नतिया
मतिया गइल बा मारल,आन्हर बनल बा अँखिया
कुर्सी के खेल आपन, नेतवा के अलगे जतिया।

जाति धरम के बजरिया, फैलल बा आजु सगरी
बूझे ना दुख दीनवा के सुन रे भाई।

कहीं आस ना किनारा, केकरा के दिहीं दोसिया
भाई बनल बा दुसमन, आ लूट रहल बा गोतिया
खेतओ ना रहल आपन, खोजत बजारू खदिया
जतिया ला भले मुअनीं, आजु लूटि रहल जतिया।

पीठिया त खरहर खटिया, माथे छिनाइल पगड़ी
हटे ना हटावत दुखवा कइसे हटि रे भाई।

छोटे-छोटे ललसा, छोटे रे मोर आसि के कलसा
भले हम कपूत माई, पूरइह मोरि ललसा
भर पेट अन्न खोजीं, रोजी रोजगार खोजीं
खोजीं नाही सेठवन जस, दुआरे रोज जलसा।

रखिहऽ आँखि के पनिया, छँटिहऽ दुख के बदुरी
जनि तूड़ीहऽ भरोसवा दीनवा के रे माई।

www.bhojpurisahityangan.com

कइसे करीं मनुहार

कइसे करीं मनुहार, केहू बता दऽ ना
सुझे ना हमके राह,केहू बता दऽ ना।

मन होत अधीर, सखी देखि सेज खाली
कइसे मन धीरज धरे, केहू बता दऽ ना।

बरिसे सावन संग, तड़ित घनघोर सखी
काटीं कइसे मधुमास,केहू बता दऽ ना।

राता जस आँखि, मन भीतर टुभुकत पीर
पिया बसे दूर देश, केहू बुला दऽ ना।

टुभकल छोड़ऽ ननदो, नीक ना लागे बाति
साईं के बाति सुनाके, केहू सुता दऽ ना।

सावन बीते पर बा, भादो नियराइल
जरि रहल बिरह से देह,केहू बुझा दऽ ना।

सुनि बाति बिरह के, धवलन देस किशोर
घरनी भिरी संदेश, केहू पहुंचा दऽ ना।

www.bhojpurisahityangan.com

बदलत परिवेश

कट गइल दरख्त गाँव बधार के
हो गइल बधार बे सिंगार के।

पावस विचित्र देश में तू देखि लऽ
प्रेम कहाँ भाग गइल परिवार के।

लाज उनकर ना रहल अब आँखि में
काज बदलल देखि लऽ सरकार के।

नाम कनक, सांच ऊ सोना ना हऽ
सांचि कहीं ऊ फूल ह कचनार के।

नाक बड़हन जनि करऽ किशोर तू
कटि जाई ढोवे में बेकार के।

अब कद बढ़ाई गुण, सेवाभाव से
जनि पड़ीं फेरा करज उधार के।

घाव मन के देखा के का करब
ना मिली मरहम इहां उधार के।

प्यार त सौदा भइल एह देश में
जनि करीं इकरार झूठा प्यार के।

चुप बइठल ह किशोर मुँह दाबि के
का कहीं हम बहीर, एह सरकार के।

www.bhojpurisahityangan.com

बढ़त रहीं जे राह में

गाँव कहाँ भुला गइल
आस कहाँ लुटा गइल।

बढ़त रहीं जे राह में
देखऽ दीप बुता गइल।

सत्ता मंजिल उनके ह
सत्ता पा बउरा गइल।

कुर्सी भूखा होखेले
लूट के माल खा गइल।

आदिपुरुष श्रीराम के
दुनिया के बतला गइल।

मनु के संतान देखीं
आपन वंश भुला गइल।

दशा दिशा एह देश के
देखऽ देश भुला गइल।

पूरब देखऽ चाल छोड़
पछिम दिशा में धा गइल।

पीटे माथ किशोर अब
सब इतिहास बिला गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

माई

इयाद बड़ूए बाकी, घर उदास बा रे माई
आज खर जीउतिया, सून घर-बार बा रे माई।

माई एगो आखर ना, करतार तूही माई
कतरा कतरा खूनवा के, कर्जदार बा रे माई।

हथवा तोहार माथे, जग के ना बुझनीं
अब मथवा प बोझवा, सवार बा रे माई।

ममता के छंहिया, छिना गइल जहिया से
गँउवा के रहिया अब, अन्हार बा रे माई।

छोट जाना बढ़िया से, बसावत बाड़े घरवा
नाती पोता सब लोग, जूझार बा रे माई।

विकास बाटे लउकत,चहुंओर घरवा दुआरे
आज तोरा बिना, घरे अन्हार बा रे माई।

किशोर ताके सगरो, चाहस माई के देखल
अंतर में उठत बा, जवार बा रे माई।

www.bhojpurisahityangan.com

घरे-घरे एके हाल

आप रूप भोजन, पर रूप सिंगार
कहाँ रहल बाबू अब, अइसन विचार।

फैशन के जोर बा, बुढ़ियो ना पीछे
हँसेला लोगि देखि, ओकर सिंगार।

कलर कइल बाल बा, देखऽ ना जूड़ा
मुँह त लागेला जइसे, पाकल पियार।

हाथ में मोबाइल, आँखि पर चसमा
फेसबुक पर फोटो बाटे भरमार।

रीयल से दूर, रील खूब भावता
गूगल प खोजेले ऊ नयका इयार।

घरवो में रहके, घरवा के बाहर
ऊपर से नखरा के अलगे बजार।

घरे-घरे इहे हाल मुँह जनि खोलऽ
देखऽ किशोर आपन पीटले कपार।

www.bhojpurisahityangan.com

एगो आम आदमी

काहे उदास आजु, एगो आम आदमी
चाहीं ना कहे जाम, एगो आम आदमी।

रोटी ह सवाल यार, जवाबो त रोटी ह
रोटी के इंतजार में, एगो आम आदमी।

हथवा के नइखे काम, मने दुखवा भरल
पढ़ि बइठल बेरोजगार, एगो आम आदमी।

उनुका चाहेला जाम, संग कांचे के चाम
ओकर जरेला चाम, एगो आम आदमी।

ऊ ह माटी के लाल, माथे करजा के बोझ
ओकर नाम ह मजूर, एगो आम आदमी।

मुर्गा दारू पर बिके, दू गो रोटी पर बिके
ईंटा भट्ठी पर बिके, एगो आम आदमी।

केहू बूझे ना दूख, केहू सुने ना दुख
दुख ढोवत बा खुद, एगो आम आदमी।

www.bhojpurisahityangan.com

कबले रहीं हम चुप

कबले रहीं हम चुप, ई बुझात नइखे
बोलब अब हमहूं, चुपे रहात नइखे।

चौखट हमरे खातिर, उखाड़ अब फेंकीं
हमरा अन्हार घर, अब सोहात नइखे।

खुला आसमान देखि, दिल मचल गइल
बरजल ना मानब, मंजिल भेंटात नइखे।

आस जरि गइल मन के, मनवें के भीतर
पांखि काटि के रखनीं, ई बुझात नइखे।

मौनो प पहरा, चौकीदारी छोड़ि दीं
आँखिन के लोर के, मरम बुझात नइखे।

इज्जत के नामे, कबले मारब सपना
बेटी इज्जत राखी, ई बुझात नइखे।

नारी के नंगा करी, जनि बताव जाति
भूख नारी देह के, काहे बुझात नइखे।

किशोर अबहूं समझऽ,पांखि जनि काटऽ
उड़े दऽ हमरो के, अब अड़ात नइखे।

www.bhojpurisahityangan.com

चान मामा घरे

तीन डेग में चान पा गइनीं
देखत-देखत लक्ष्य पा गइनीं।

रहे आजु ले ई एगो सपना
चान मामा के घर आ गइनीं।

भारत देश के महिमा बढ़ावत
बड़हन उपलब्धि पा इतरइनी।

चलऽ करे तइयारी आगे के
सुनीं के मन रउवा भा गइनीं।

घर के चान सुनर चिकन बाटे
रवा काहे मेकअप ना कइनीं।

खूब शिकायत रहे रउवा से
मिलनी तबहूं काहे ना कइनीं।

निकल समुंदर अकाशे गइनीं
हमहूं रउवा पीछे आ गइनीं।

मामा भगीना साथे रहब जा
सपना आजु पूरा पा कइनीं।

www.bhojpurisahityangan.com

करजा

करज के गणित, आजु ले हमरा ना बुझाइल
बरिसन देनीं बाकिर मूलधन ना ओराइल।

काका कहत रहन, किसान के जिनिगी करजे
अगहन आइल रहे, बाकिर अन्न ना भेंटाइल।

अगहन महीना ना हऽ, सपना हऽ किसान के
अगहन आइल बाकिर, सपनवा ना भेंटाइल।

खेत तऽ रेहन रहे, चौधरी जी के नांवे
अगहन हम का जानीं, जब खेत ना जोताइल।

किसान भइल पाप, ऊपर से दूगो बेटी
खेत तऽ रेहन रहे, खेतवो ना बेचाइल।

बेटी का पढ़ाईं, गिद्ध चहुंओर बइठल
आँगन उघार बाटे, परदा ना टंगाइल।

www.bhojpurisahityangan.com

दूनों लोक से गइले पांडे

दूनों लोक से गइले पांड़े
नाहीं हलुआ मिलल, ना माड़े।

करम चमार क', कांखी त पतरा
नाहीं मिलल दछिना, ना भाड़े।

खिचड़ी खात खूब नीक लागे
बटुली माजत, पेट खूब फाड़े।

सुनऽ पंड़ाइन साथे ना पादस
खाली जब छाना, छकके आड़े।

गरीब का खाई, का खियाईं
पूजा पर बइठल, बाड़े पाड़े।

नीक ना लागे, थोपल जिनिगी
देहे वस्त्र ना, पूस के जाड़े।

किशोर गावले गजल-जनगीत
आम के साथे, होके खाड़े।

www.bhojpurisahityangan.com

जिनिगी त मनुहार ह

छोड़ झगड़ा, आव अँकवरी, हमार गुहार ह
रूठला में का रखल, जिनिगी त मनुहार ह।

अहम में तनल कबले रहब, टकराव छोड़ि द
खुदगर्जी के भाव छोड़, परिवारे त संसार ह।

पास रहियो के दूरी, जिनिगी अधूरे नूं बा
आ गले लग जा, प्यार त जिनिगी के सार ह।

मुहब्बत के घर जहँवा, उहँवा झगड़ा ना रही
नोंक-झोंक आपस के, तकरार ना प्यार ह।

जिनिगी भूल-भुलैया, गजब के भटकाव बा
चाहे कतनो भटकब, मंजिल त हरिद्वार ह।

जिनिगी रोआवेला, हँसावेला, पढ़ावेला भाई
किशोर प्रेमी हवन, प्रेम जिनिगी के उपहार ह।

www.bhojpurisahityangan.com

ई सिंगार भारी बा

बलम पंजरा में नइखन, ई सिंगार भारी बा
सब घर भरल पड़ल बा, अँकवार खाली बा।

नयन पथरा गइल, अँखियन नींद पराइल बा
बिरह अब प्रौढ़ भइल, प्रेम संसार जाली बा।

दिलासा देके ना अइलऽ, मन तोहरे के खोजत बा
बहाना ना चली कवनो, कसुरवार माली बा।

राते सपना में तू अइबऽ, सुनी सेजिया सिहाइल बा
बलम सपनो में ना अइलऽ, मोर इयार मवाली बा।

किशोर बूझऽ तूं बतिया, प्रेम तोहके बुलावत बा
मदन रस गात से टपकत, प्रेम अँकवार खाली बा।

www.bhojpurisahityangan.com

सब पुरान हउवे

बाति आजु के ना पुरान हउवे
राजनीति लंगन के कुरान हउवे।

चाणक्य, चंद्रगुप्त, अब कहँवा
सत्ता ख़रीद बिक्री के दुकान हउवे।

दिल्ली, पटना, मुंबई भा बंगलुरू
कुर्सी के लड़ाई सगरो पुरान हउवे।

वंशवाद के परंपरा हर जगह पाइब
नयाब ना ई परंपरा पुरान हउवे।

काशी-काबा के लड़ावल ठीक ना
गीता कुरान मानवता के पुराण हउवे।

हिन्दू मुस्लिम के भीतर एके बइठल
धरम कुछ अउर ना ऊ त रमजान हउवे।

राजनीति छोड़ीं प्रेम बाँटत चलीं अब
किशोर के कहनाम ई पुरान हउवे।

www.bhojpurisahityangan.com

प्रीति के रंग अजूबा

प्रीत के रंग अजूबा मितवा का गाईं हम गीत

जारि बढ़नी देहि जब, हरि जी भइले ठाड़ि
ई कइसन बा रीत
खुद के भुलइनी प्रेम राहि, राधा बनिके आजु
ई कइसन बा प्रीत
प्रीत के रंग अजूबा...

प्रेम राहि में काँट-कुश ह बिरह घरी के बेरा
कान्हा ई कइसन ह फेरा
भगलऽ कवना डर से कान्हा, कहवाँ डललऽ डेरा
कान्हा छोड़ि द तेरा मेरा
प्रीत के रंग अजूबा...

रहनी ना दू, भइनी एक हम, प्रीत के ई ह फेरा
चल आवऽ लवटि जा डेरा
हेरा फेरी जन्म से कइलऽ, जग जंजाल लूटेरा
सचहूँ मोर हिया तोर डेरा
प्रीत के रंग अजूबा...

www.bhojpurisahityangan.com

शुभ कोहबर

राम विराजत हिया में मोरा
हम त सिया सुकुवारी
हाथ में लेके हम वरमाला
राम-राम पुकारी
मिलन के राति
आँखिन बा खोजत
शुभ कोहबर।

तरसत नयन मिलन के सखी
रचिके मेंहदी हाथे
नीक न लागे जग के ठिठोली
ना जग जाई साथे
ठिठकीं जनि अब
आईं राम दुलारे
शुभ कोहबर।

सेज सजाई बइठल सेज पर
सुनर सिया सुकुवारी
आईं हटाईं घूंघट सिया के
पकड़ीं भरि अँकवारी
महकी प्रेम रस
सिया उर अँगना
शुभ कोहबर।

सिया राम मिली एक हो जाई

www.bhojpurisahityangan.com

भागि पराई जुदाई
कनक भवन गुलजार होई
हिया में बसी खुदाई
जग जरि जाई
देखि मिलन के
शुभ कोहबर।

❖❖❖❖❖

नईहर के दिन चार

जनि अगरा सखी बाबा दुआरे
छोड़े के रहऽ तइयार
माई के हऊ आँखि के पुतरिया
बाबू के हऊ दुलार
जनि भूला साँच बाति ह
ससुरे ह घर बार
नईहर के दिन चार।

बाबा के चाहत राम जस दुल्हा
धिया तूहूँ सिया सुकुवार
माई कहे बेटी रखिह इज्जतिया
दूनो कुल दिह तूहूँ तार
बाति के मरम बूझि
ससुरे तोहार घर
नईहर के दिन चार।

www.bhojpurisahityangan.com

नईहर छूटी जानल बा बतिया
राम बनिहें दुल्हा तोहार
रोअल धोअल काम ना आई
दुअरा प आइल कहार
जग ई नईहर
ससुरा हरि घर
नईहर के दिन चार।

जनि बटोर अन्न धन सोनवा
माहुर ई संसार
राम संग नाता जोड़ि धिया तू
हो जाई बेड़ा पार
सांचहूँ धिया मोरि
राम तोहार बर
नईहर के दिन चार।

www.bhojpurisahityangan.com

अंतर ज्योत जराईं

बाहर धधकत जग ज्वाला बा
जारत ज्ञान बा भाई
माया सत्य के बीच लड़ाई
का कबहूँ फरिआई?
सोहम् नाद जगाई
अंतर ज्योत जराईं।

गुरु देखवले राहि उहे पथ
मंजिल तक पहुंचाई
कर्मकांड बाहर के जप तप
जगवे में अझुराई
अनहद नाद जगाई
अंतर ज्योत जराईं।

राउर जाति हरि के जतिया
भात हरि के खाईं
मति दउड़ी अब देह के पाछे
देह राखि बन जाई
शिवोहम नाद जगाई
अंतर ज्योत जराईं।

राउर राज अंतर में बसल बा
राजा से करीं दोहाई
डूबी के अंतर मइलि के धोईं
अंतर में बड़ी काई

www.bhojpurisahityangan.com

जीव के शिव बनाई
अंतर ज्योत जराईं।

कनक, कामिनी, जग ई मेला
सब हऽ जग सुघराई
जनि भुलाईं जग के रेला में
कबो ना घरे पहुंचाई
निज रूप जग जाई
अंतर ज्योत जराईं।



साधो मति चंचल ना नीक

चलनी आजु ले मन के माफिक
छोड़ि के सत्य के लीक
गइनीं भूला हम जगत के मेला
प्रभु के रहि नजदीक
राहि भूलि भटकत हम बानी
केकरा से करीं तस्दीक
साधो मति चंचल ना नीक।

कबीर कहे मन पटकि पछाड़
भूली जगत के रीत
नवधा भक्ति तुलसी के ले तू
हरि संग करलऽ प्रीत
ना मनबऽ त कुछ ना भेंटाईं

www.bhojpurisahityangan.com

ना पइबऽ जग जीत
साधो मति चंचल ना नीक।

आजुले तू जगत के भजलऽ
हरि दिहलऽ बिसराई
जबले दास देहिया के रहबऽ
हरि ना गुरु पेठाई
आनि-जानि ना छूटी जग से
लाख जतन करऽ भाई
साधो मति चंचल ना नीक।

भीतर विराजत गंगा सागर
संग तिरबेनी के तीर
कूड़ा भरल चित धोई पखारऽ
करलऽ चित के थिर
जगत जोड़ि तूड़ऽ बनऽ हरि के
तबहीं बनबऽ मीर
साधो मति चंचल ना नीक।

www.bhojpurisahityangan.com

नाचऽ

नाचऽ हो मन नाचऽ
सबहीं नचावत राम गोसाईं
समझऽ तूं ई बाति
नाचऽ हो मन नाचऽ।

कबीरा कहे
मन माति के नाचऽ
गिरि समुंदर धरती सगरो
रोइ आ हँसिके नाचऽ
नाचऽ हो मन नाचऽ।

माया नचावे राति दिनवा
देह मद में बउराई
मृत्यु नचावे, मुक्ति नचावे
राम के सत्य बताई
मोह-माया के बंधन तुड़ऽ
नाचऽ हो मन नाचऽ।

सती के शव संग नचले
शिवजी होके मस्त
माया कलवारिन नचावे
घीसू माधव करि पस्त
महाठगिनी नयन झमकावे
नाचऽ हो मन नाचऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

गावऽ नाचऽ मगन होई के
जे नाची से बांची
जन्म मरण जीवन के खेला
माया दुख के खांची
कबीर कहे मानऽ तू बतिया
नाचऽ हो मन नाचऽ।

❖❖❖❖❖

गुनहीन अँखिया के आन्हर

झूठा जग के सत्य समझनीं
आँख रहित हम आन्हर
अहम् में जीयत जिनिगी बितल
घूमत रहनी हम बाहर
अपने हाथे नसनीं जिनिगिया
ओढ़ि के जग के चादर
गुनहीन अँखिया के आन्हर।

भोर के खोज में राति गुजरलीं
सूरज के ग्रहण लागल
पोथा, पतरी, पंडित के फेर में
ज्ञान हमार बा भागल
ठग के फेर में रहनी आजुले
ठगवे गुरु जस लागल
गुनहीन अँखिया के आन्हर।

www.bhojpurisahityangan.com

मठिया खोलि मठाधीश गुरु से
नेह के नाता लागल
संत समझि के पुजनी आजुले
माथ प माया नाचल
रहनी बटोरत अन्न, धन, सोनवा
अंतर जोति ना जागल
गुनहीन अँखिया के आन्हर।

हरि जी भेजलन गुरु के दुआरे
भरम गइल सब मेट
गुरु राहि के पथिक जब बननीं
हरि से हो गइल भेंट
भटकत मन के ठांव मिलल
खुलल आँखि ओहि ठांव
गुनहीन, आन्हर चढ़ल हरि के नाव।

www.bhojpurisahityangan.com

देहिया माया ह भाई

सत् के संग करऽ
गुरु दिहें राह दिखाई
तम से भरल जग
जगमग जगवा रोआई
आव चलऽ सत्संग में बइठऽ
दिही ई देहिया जराई
देहिया माया ह भाई।

ई देहिया में फँसल जे रहलऽ
चौरासी में लटकाई
ई देहिया के भीतरी बइठल
सँउसे जग के खुदाई
जीयते जीव जारि ई देहिया
सत् के लुती लगाई
देहिया माया ह भाई।

कनक भवन अंतर में विराजे
बसे जहाँ राम रघुराई
माँस हाड़ के कबले सजइबऽ
देहिया संगि जरि जाई
जुड़ऽ राम से छोड़ि के देहिया
रामे सत्य ह भाई
देहिया माया ह भाई।

www.bhojpurisahityangan.com

छोड़ि दऽ चक्कर मन माया के
महाठगिनी ऊ भाई
समय गँवाव जनि देह के पीछे
हाथे कुछु ना आई
हरि सत्य तू सत् स्वरूप हवऽ
काहे गइलऽ विसराई
देहिया माया ह भाई।

www.bhojpurisahityangan.com

पिया मिलन के आस

मन मंदिर में आस के दीपक
जारि बइठनी कोहबर
बर माला हाथे में रह गइल
ना अइलन सुनर बर
गोबर लिपल घर दुआर के
मन के पूरल ना आस
टूटल पिया मिलन के आस।

राति सेज रचि-रचि सजवनीं
पिया के पाई सनेस
पिया आई दुअरा से लवटले
रूठले मोर महेस
कइसे मनाई आपन शिव के
मनवा सोंचि उदास
टूटल पिया मिलन के आस।

माथ चढ़लि माया के मोटरी
फेंक परइनीं साथे
फेरब सात फेरा शिव संगि में
डालि सेनुर के माथे
भले बउराहवा सुनर बर बा
ओहि से पूरी आस
पूरी पिया मिलन के आस।

पाई शिव के जीव बा पागल

www.bhojpurisahityangan.com

जीव शिव के संग नाचत
पागल हम, भतरो मोर पागल
गल पा हमहूँ नाचत
मिलन राति हम खुदे मुअनी
टूट गइल जग फाँस
पूरल पिया मिलन के आस।

www.bhojpurisahityangan.com

अंत में खुदा-खुदा

खेलत खात हम खुद के भुलइनी
बन्हलस मोहे जग पास
अहम् अकड़ में कुछ ना बुझनी
केहू के ना डलनी घास
उमिर बिगड़नी जाति भात में
हरि से होके जुदा
अंत में खुदा-खुदा।

संत के बतिया भूली के भाई
जगवे में रहनी भुलाइल
प्रेम के पाठ कबीर जे पढ़वलन
मनवा से ऊ बिसराइल
मंजिल छोड़ कुराहे चलनी
खुद से होके जुदा
अंत में खुदा-खुदा।

राम ब्रम्ह, राम जग रचवइया
रामे सत्य साईं भइया
गुरु अँगना बइठ जब जननी
रामे जगत खेवइया
बीतल जवानी जग धंधा में
खुदा से होके जुदा
अंत में खुदा-खुदा।

www.bhojpurisahityangan.com

मानुष के जाति एके

ना केहू हिन्दू, ना केहू तुरक
बइठल एके भीतर
पंच तत्व मिली देह बनल बा
एके लौ जरे भीतर
एके सरूप सभ
विश्वरूप एके
मानुष के जाति एके।

दूसरो ना भेद कुछु
भूल भरम सब कुछु
एके से सब कुछु
जनि बाँटऽ कुछु कुछु
कोटि तरंग उठे
सागर बा एके
मानुष के जाति एके।

दुई दूर कर बिना सोर के
सब अंतर से साधु
अनहद शब्द उठे सब भीतर
चोर होखे भा साधु
काजी, पंडित होखे भा हाजी
सबमें नूर बा एके
मानुष के जाति एके।

www.bhojpurisahityangan.com

जग सराय सब हवे मुसाफिर
का साधु सन्यासी
बिना ज्ञान आवागमन ना छूटी
घूमऽ काबा भा कासी
गफलत छोड़ि एके से जुड़के
देखऽ सबमें एके
मानुष के जाति एके।

www.bhojpurisahityangan.com

सत्, साहिब, हुजूर

दीदा रहते भरम ना मिटल
सत् पराइल दूर
अन्हरन बीच सीखे ना मिलल
कहवाँ बसे हुजूर
यार त अन्दर घर बनवले
ना बुझनी हम धुर
सत्, साहिब, हुजूर।

सत् के खोजे, दूर भटकनी
कासी, काबा, प्रयाग
मिलन भइल ना दूर देस में
मन के बुझल ना आगि
गुरु बतवले ठांव मिलन के
तनिको रहे ना दूर
सत, साहिब, हुजूर।

बाजल अनहद, मन अगराइल
हरदम संगे हुजूर
गंगे ना तिरबेनियो भीतर
भीतर गजब के नूर
समय गवइनीं बेमतलब के
पिया ना रहले दूर
सत, साहिब, हुजूर।

www.bhojpurisahityangan.com

हरि चरण सुखदाई

धर्मकांटा पर जब हम बइठनी
ई का देखनी भाई
पाप के पलड़ा धरती छुअत
पुण्य हवा लहराई
मन कहे छोड़ऽ चतुराई अब
जगवा ना साथे जाई
हरि चरण सुखदाई रे मन
हरि चरण सुखदाई।

वेद पुराण के बाति छोड़ि हम
जग में गइनीं अझुराई
पूत, भतार, देहिये खातिर हम
हरि के दिहनीं बिसराई
गुरुजी कहले जगत ई झूठा
सत् लिहलऽ पतिआई
सत् तोहके हरि चरण भेंटाई
हरि चरण सुखदाई।

कर्म करऽ जे हाथ में तोहरा
जुड़ऽ ना ओहि से भाई
करता धरता हरि एके बानीं
अनासक्ति अपनाईं
डोली कहार दुअरे पर ठाड़े
कबो बुलावा चली आई
हरि के भजल भव पार लगाई
हरि चरण सुखदाई।

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com



नाम कनक किशोर ह, गाँव ह हमार नोनार
बाबूजी रहले भोजपुरी के लेखक बरियार
नाम उहां के चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह
अपना हाथे खूब भर गइले भोजपुरी भंडार।

माई ललिता कुमारी, मधुबाला पत्नी के नाम
थाना पीरो, जिला भोजपुर, राँची में मोकाम
साहित्य सेवा में हमरो बा छोट मोट अवदान
भोजपुरी-हिन्दी में रचना, संपादन के काम।

वन सेवा में जीवन बितल, गइनीं गुरु के द्वार
रास ना आइल जग के मेला, ना कइनीं बैपार
भोजपुरी ह प्राण से बढ़के, सांस सांस में वास
सेवा मिलल माई भाषा के जिनगी के उपहार।

हरि के प्रेम में रचि बसि गइनीं, गजबे लागल रंग
बिरह सतावे हरि मिलन के, जग लागे रे बदरंग
हरि भेजले गुरु के दुआरे, गुरु धरवलन हरि संग
हरि जी चाहीं संग छुड़ावल, मन भावेला हरि रंग।

चलभाष - 9102246536
ईमेल - kkishorejfs@gmail.com
पता - बी/9, नेताजी नगर
काँटा टोली, राँची (झारखंड) - 834001

श्री नर्मदा प्रकाशन
साहित्य सेवा में समर्पित
ISBN 978-93-344-5545-8
9 789334 455458
Rs. 280.00